केन्द्रीय विद्यालय संगठन

जबलपुर संभाग

कक्षा–दस (हिन्दी अ)

अध्ययन सामग्री

–धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए–

मुख्य संरक्षक

श्री रंगलाल जामुदा

आयुक्त, के.वि.सं.,नई दिल्ली

संरक्षक

श्रीमती व्ही. बिसारिया

सहायक आयुक्त, के.वि.सं., जबलपुर संभाग

परामर्शदाता

श्री व्ही. एम. चेरियन

शिक्षाधिकारी, के.वि.सं., जबलपुर संभाग

मार्गदर्शक

श्री आर. कुमार

प्राचार्य, के0 वि0 मनेन्द्रगढ़

कार्यकर्त्ता

श्री आर. के. कौशिक

पी0जी0टी0 हिन्दी

के0 वि0 मनेन्द्रगढ़

<u>खण्ड-क</u>

अपठित गद्यांश

अपठित गद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखते समय निम्नलिखित छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. गद्यांश को लगभग दो–तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ें।

2. फिर प्रश्नों को पढ़कर दुबारा गद्यांश को पढ़ें।

3.अपने उत्तरों में अपने विचार अनावश्यक रूप से न जोड़े, जहॉ तक संभव हो लेखक के विचारों को आधार बनाकर ही उत्तर संक्षिप्त और सरल शब्दों में लिखें।

4. शीर्षक केन्द्रीय भाव के अनुकूल और संक्षिप्त होना चाहिए।अधिकतम 4–5 शब्द तक।

<u>१.</u>

गाँधी-एक दुबला-पतला व्यक्ति, सत्य-अहिंसा को जीवन-मूल्य मानने वाला व्यक्ति, जो शरीर से भले ही कमजोर रहे हों, पर मनोबल पहाड़ सा अडिग। भारतवर्ष में राष्ट्रपिता का जीवन-दर्शन कहीं खो सा गया था और उनके आदर्श व्यवहार से कोसों दूर मंचों पर तालियाँबटोरने भर के लिए रह गए थे और धूल धूसरित सत्य अहिंसा ग्रंथागारों में दीमकों से संवाद बनाने की कोशिशों में देखे जाते थे। ठीक ऐसे ही समय में गाँधीवाद पर केन्द्रित फिल्म लगे रहो मुन्ना भाई आती है और गाँधी अचानक प्रासंगिक लगने लगते हैं। गाँधीवादी धारा को बिल्कुल भूल चुके लोगों को इस फिल्म ने एकबार फिर से गाँधीवाद का पाठ पढ़ाया। इसका प्रभाव सड़कों पर भी देखने को मिलने लगा है। उड़ीसा के अध्यापकों ने अपने अधिकारों की माँग करते हुए हिंसात्मक विरोध की जगह सड़कों पर बैठकर जूते पालिस किए, तो महाराष्ट्र पुलिस ने सर्वश्रेष्ठ थानों के साथ ही अंतिम तीन स्थानों पर रहने वाले थानों को भी गुलदस्ते भेंट किए। फिल्म में बताया गया है कि किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए हिंसा ही एकमात्र सहारा नहीं होता और अहिंसा कमजोरों का हथियार नहीं है। अहिंसा और सत्य वहीं कारगर होते हैं, जहाँ दृढ़ इच्छाशक्ति और उच्च मनोबल होता है। बिना हथियार उठाए भी जंग जीती जा सकती है। आज हम सत्य व अहिंसा के पथ पर चलने वाले को डरपोक की संज्ञा से विभूषित करते है। गाँधी ने भी कहा था कि सत्य और अहिंसा बहुत मामलों में स्त्रैणों के काम आ सकती है। अर्थात् कमजोर व्यक्ति, जो इन मूल्यों पर कोई श्रद्धा नहीं रखता, अपनी कमजोरी छिपाने के लिए इनका सहारा ले सकता है। गाँधीजी इन्हें (सत्य व अहिंसा) धारण करने के लिए व्यक्ति में मनोबल व इच्छाशक्ति आवश्यक मानते हैं। इतिहास गवाह है, आजादी का इतिहास, जब भारतभूमि सत्य और अहिंसा की प्रयोगस्थली बनी।

अति चिंता का विषय है कि आज किशोरों व युवाओं में गाँधीजी को कोसने का एक फैशन चल पड़ा है। ऐसे लोगों के इतिहास की समझ पर मुझे तरस आता है। कुछ दिन पहले ही कक्षा चार में पढ़ने वाले छात्र को उसकी माँ ने यह कहते हुए सुना कि गाँधी जी अच्छे नहीं थे। माँ चिंतित हुई। हमारे बात करने पर उस माँ ने बताया कि जब से उसने भगतसिंह फिल्म देखी है, तब से ही ऐसा कहता रहता है। स्थिति पर विचार कीजिए। मुझे लगता है कि फिल्मकारों का यह दायित्व होना चाहिए कि किसी एक व्यक्ति के चरित्र को ऊँचा दिखाने के लिए दूसरे व्यक्ति का उपयोग सुविधाभोगी की तरह विखण्डन में नहीं किया जाना चाहिए।

हमारा भी यह दायित्व है कि स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों की चर्चा अपने बच्चों के बीच करें,ताकि वे देश की मिट्टी से जुड़े।अंततः मैं यही कहना चाहूँगी कि आज के परिदृश्य में जबकि सारा विश्व जल

रहा है।हिंसा जैसे मनुष्य की फितरत बन चुकी है, गाँधी जी को चौक पर लगे पुतलों से निकाल कर दिल में बसा लें, तभी विश्वबंन्धुत्व व भाईचारा जैसे शब्द अपने वजूद को तलाश पायेंगे।

प्रश्न-

क) गाँधी जी ने किन जीवन मूल्यों को अपनाया?

ख) आज गाँधी जी का जीवन दर्शन किस प्रकार काम आने लगा है?

ग) सत्य और अहिंसा कहाँ कारगर होते हैं?

घ) सत्य और अहिंसा बहुत मामलों में किनके काम आ सकती है क्यों?

ङ) माँ की चिंता का क्या कारण था?

च) फिल्मकारों का क्या दायित्व होना चाहिए?

छ) सत्य अहिंसा ग्रंथागारों में दीमकों से संवाद बनाने की कोशिश में देखे जाते हैं। - स्पष्ट कीजिए।

ज) अहिंसा का समास-विग्रह कर समास भेद बताइए।

झ) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर-

क) गाँधीजी ने सत्य व अहिंसा के जीवन-मूल्य को अपनाया।

ख) आज गाँधी जी का जीवन-दर्शन व्यवहार से कोसों दूर मंचों पर तालियाँ बटोरने भर के लिए रह गया है।

ग) सत्य और अहिंसा वही कारगर होते हैं, जहाँ दृढ़ इच्छाशक्ति और उच्च मनोबल होता है।

घ) सत्य और अहिंसा बहुत मामलों में स्त्रैणों के काम आ सकती है। क्योंकि कमजोर व्यक्ति, जो इन मूल्यों पर कोई श्रद्धा नहीं रखता, अपनी कमजोरी छिपाने के लिए इनका सहारा ले सकता है।

ङ) माँ ने कक्षा चार में पढ़ने वाले अपने बेटे को यह कहते सुना कि गाँधी जी अच्छे नहीं थे और वह चिंतित हो गई।

च) फिल्मकारों का यह दायित्व होना चाहिए कि किसी एक व्यक्ति के चरित्र को ऊँचा दिखाने के लिए दूसरे व्यक्ति का उपयोग सुविधाभोगी की तरह विखण्डन में न करे।

छ) गाँधी वादी दर्शन का पाठक न होना।

ज) न हिंसा- नञ तत्परूष समास।

झ) गाँधीवाद की प्रासंगिकता, वैश्विक समस्याएँ और गाँधी, सत्य और अहिंसा, एक हथियार आदि। इसी से मिलते-जुलते अन्य शीर्षक भी स्वीकार्य हैं।

२

आत्मनिर्भरता का अर्थ है- अपने ऊपर निर्भर रहना, जो व्यक्ति दूसरे के मुँह को नहीं ताकते वे ही आत्मनिर्भर होते हैं। वस्तुतः आत्मनिर्भरता के बल पर कार्य करते रहना आत्मनिर्भरता है।आत्मनिर्भरता का अर्थ है- समाज, निज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करना। व्यक्ति,समाज तथा राष्ट्र में आत्मविश्वास की भावना, आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। स्वावंलम्बन जीवन की सफलता की पहली सीढ़ी है सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को स्वावलंबी अवश्य होना चाहिए। स्वावलंबन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के जीवन में सफलता प्राप्ति का महामंत्र है। स्वावलंबन जीवन का अमूल्य आभूषण है, वीरों और कर्मयोगियों का इष्टदेव है। सर्वांगीण उन्नति का आधार है।जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमें आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वावलंबी मनुष्य के सामने कोई भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से अपने आत्मबल से उसे अवश्यही सम्पूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुँह नही देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र

में निरंतर कामयाब होता जाता है। सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है। जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप ही विश्वास नहीं हो वह भला क्या कर पाएगा? परन्तु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा। वह जो करेगा सोच-समझकर धैर्य से करेगा। मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है। सबसे बड़ा गुण भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।

आत्मनिर्भरता मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है। स्वावलंबी मनुष्य को अपने आप पर विश्वास होता है जिससे वह किसी के भी कहने में नहीं आ सकता। यदि हमें कोई काम सुधारना है तो हमें किसी के अधीन नहीं रहना चाहिए बल्कि उसे स्वयं करना चाहिए। एकलव्य स्वयं के प्रयास से धनुर्विद्या में प्रवीण बना। निपट, दरिद्र विद्यार्थी लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री बने, साधारण से परिवार मे जन्मे जैल सिंह स्वावलंबन के सहारे ही भारत के राष्ट्रपति बने। जिस प्रकार अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाते है, सूक्ति भाषा को चमत्कृत करती हैं, आभूषण नारी का सौन्दर्य बढ़ाते हैं, उसी प्रकार आत्मनिर्भरता मानव में अनेक गुणों की प्रतिष्ठा करती है।

प्रश्न :

१. आत्मनिर्भर व्यक्ति से आप क्या समझते हैं?

२. सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है। कैसे?

३. एकलव्य और लाल बहादुर शास्त्री के उदाहरण लेखक ने किस संदर्भ में दिए हैं?

४. आत्मनिर्भरता मनुष्य को श्रेष्ठ किस प्रकार बनाती हैं?

५. 'आत्मा' शब्द में 'निर्भरता' शब्द जोड़कर 'आत्मनिर्भरता' बना। इसी प्रकार आत्मा में कुछ अन्य शब्द जोड़कर दो शब्द बताइए। ध्यान रहे कि वे शब्द उपर्युक्त अनुच्छेद में न हो।

६. सफल और कोशिश शब्दों के लिए अनुच्छेद में प्रयुक्त किए गए शब्दों को छाँटकर लिखिए।

उत्तर-

१. आत्मनिर्भरता व्यक्ति से हम यह समझते हैं कि ऐसा व्यक्ति जो स्वयं पर निर्भर रहता है, वह अपने काम के लिए किसी दूसरे का मुँह नहीं ताकता।

२. सफलता स्वावलंबी व्यक्ति की गुलामी करती है। स्वावलंबी व्यक्ति को सभी कामों में सफलता मिलती है। वह अपने दृढ़ विश्वास के आधार पर सफलता प्राप्त करता है।

३. एकलव्य ने स्वावलंबन के आधार पर धनुर्विद्या में सफलता प्राप्त की थी। इसी प्रकार लाल बहादुर शास्त्री ने अपने आत्मविश्वास, स्वावलंबन, परिश्रम तथा आत्मनिर्भरता के बल पर प्रधानमंत्री के पद तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की थी। इन दोनों के उदाहरण आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन के संदर्भ में दिए गए हैं।

४. आत्मनिर्भरता मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है। आत्मनिर्भर व्यक्ति कभी दूसरों का मुँह नहीं ताकता। उसे अपने ऊपर पूरा विश्वास होता है। इससे उसके काम में प्रवीणता आती है।

५. आत्म + सम्मान = आत्मसम्मान

आत्म + मर्यादा = आत्ममर्यादा

आत्म + ज्ञान = आत्मज्ञान

६. सफल के लिए - कामयाब

कोशिश के लिए - प्रयास, प्रयत्न

३

दुनिया में बहुत सारे लोग हैं जो भगवान को खुश कर अपना कोई काम निकलवाना चाहते हैं और उस में भगवान को ठगने की कोशिश भी करते है। बाज नहीं आते, सांसारिक कारोबार में ठगी की ऐसी आदत पड़ी है कि कुछ गड़बड़ किए बिना पूजा-प्रार्थना भी नहीं कर सकते। ऐसे लोगों को खोजने के लिए कहीं दूर नहीं जाना, आसपास देखिए तो मुमकिन है कि आप और हम भी यहीं कर रहे हो। दुनिया के साथ ठगी, बेईमानी, धोखाधड़ी करते-करते इंसान भगवान के साथ भी वही करने लगा है। आजकल गुरुओं का बाजार लगा है और शिष्यों का जमघट। किसी शिष्य को बिना परिश्रम धनवान बनना है और किसी को बिना दवा-परहेज के जटिल बीमारियों से मुक्ति पानी है।धर्म अफीम का नशा है और लोग धर्मांध बन जाते हैं, धर्म को अफीम की गोली बनाकर खाने वाले धर्म के नाम पर हिंसा करने पर उतारू हो जाते है। यह कोई नई बात नहीं है। सदियों से ऐसा होता आया है कि धर्मांध लोग हिंसक बन जाते हैं। असल में धर्म के नाम पर लोगों ने दुकानें खोल रखी है। वे बड़े-बड़े साइन बोर्ड लगाकर भगवान का सौदा कर रहे हैं। मजहब के नाम पर व्यापार करते हैं और धनी बनने के सपने देखते हैं।

ज्ञान का प्रकाश जीवन में स्वयं हो जाए तो फिर हम धोखा नहीं खा सकते। ईश्वर तो प्रेम के भूखे हैं। श्रद्धा और विश्वास के पुष्पों से उन्हें प्रसन्न किया जा सकता है। भगवान का अनुभव हो जाए, इसके लिए आवश्यकता है ज्ञान का दीप स्वयं प्रज्ज्वलित करने की, जिससे भगवान की सच्ची भक्ति सच्चे हृदय से की जा सके।

प्रश्न-

(क) गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) धर्म की तुलना नशे से क्यों की गई हैं?

(ग) द्वंद्व समास के दो उदाहरण छाँटिए।

(घ) लोग भगवान को भी धोखा क्यों देते हैं? यह उनके किस चरित्र या मानसिकता का प्रतीक है?

(ङ) आजकल धर्म का व्यापार होरहा है। इसका क्या परिणाम हुआ है?

(च) आजकल गुरुओं का बाजार क्यों लगा है?

(छ) गद्यांश में वर्णित स्थिति से कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर -

(क) धर्म के नाम पर व्यापार एक सामाजिक कलंक।

(ख) जिस प्रकार नशे में व्यक्ति को पता नही चलता है कि वह क्या कर रहा है उसी प्रकार सांप्रदायिक भावना से ओत-प्रोत व्यक्ति धर्म के नाम पर हिंसा के लिए उतारू हो जाता है।

(ग) (i) आप और हम (ii) दवा-परहेज

(घ) लोग धनवान बनने के लिए भगवान एवं धर्म के नाम पर व्यापार करते है। यह उनकी स्वार्थपरकता एवं धर्मभ्रष्टता का प्रतीक है।

(ङ) इसका परिणाम यह होता है धर्मगुरु धर्म के नाम पर भोलेभाले लोगों को लूटने है और धर्म के नाम पर उन्हें हिंसक भी बनाते हैं।

(च) आजकल गुरुओं का बाजार इसलिए लगा है क्योंकि शिष्य बिना किसी परिश्रम के धनवान बनना चाहते हैं और बीमार बिना दवा एवं परहेज के स्वस्थ्य होना चाहता है।

(छ) इस स्थिति से ज्ञान के प्रकाश से मुक्ति मिल सकती है। मनुष्य ज्ञान का दीपक स्वयं प्रज्ज्वलित करें और ईश्वर की सच्ची भक्ति प्राप्त करें।

<u>४</u>

अब हम पहाड़ों को निहारते हुए चेरापूँजी की ओर बढ़ रहे हैं। सड़क के उस पार पहाड़ी कुहरे से घिरी हुई हैं। कछ नहीं दिखाई देता, सिवाय धवल-उज्ज्वल कुहरे के। या फिर कहीं कहीं कुहरे को चीरते हुए कछ चोटियाँ और वृक्ष नजर आते हैं।
तीन पर्वतीय अंचलों में बँटा हुआ है मेघालय-गारो खासी पर्वत और जयंतिया। इन्हीं तीन पर्वतीय अंचलों से बने हैं पाँच जिले- पूर्वी खासी पर्वतमाला, पश्चिमी खासी पर्वत जिला, पूर्वी गारो पर्वत जिला, पश्चिमी गारो पर्वत जिला और जयंतिया पर्वत जिला। हर अंचल की अपनी अलग संस्कति है, रीति-रिवाज, पूजा एवं उत्सव हैं, लेकिन हर कहीं पारिवारिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक है- भूमि, धन, संपत्ति सब माँ से बेटी को मिलती है। मातृसत्तात्मक व्यवस्था होने के कारण यहाँ नारी-शोषण की वैसी घटनाएँ नहीं होतीं, जैसी कि देश के अन्य भागों में देखने-सुनने को मिलती हैं।
स्त्री का यहाँ वर्चस्व है, यह अहसास गुवाहाटी से मेघालय की सीमा में घुसने के साथ ही होने लगता है। तमाम दुकानों पर स्त्रियाँ सौदा बेचती और बेहिचक बतियाती दिखाई देती है। शायद कमोबेश यह स्थिति पूर्वोत्तर के अन्य राज्य में भी हैं, भले ही वहाँ मातृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था न हो। कछ साल पहले मणिपुर की राजधानी इंफाल में भी यही सच देखा था। स्त्रियों का एक पूरा-का-पूरा बाजार ही है, वहाँ जिसे माइती बाजार कहते हैं- यानी माँ का बाजार। दोपहर हुई नहीं कि सिर पर सब्जी, कपड़ों या अन्य सामान के टोकरे रखे स्त्रियाँ इस बाजार में आ पहुँचती है। दिनभर सामान की बिक्री कर शाम को अपने अपने घर लौट पड़ती है। किसी प्रकार का वर्गभेद नहीं। यानी अमीर घरों की स्त्रियाँ भी इस माइती बाजार में मिल जाएँगी और गरीब घरों की स्त्रियाँ भी। यह बाजार केवल इम्फाल में ही नहीं हैं, मणिपुर के हर नगर, कस्बे, गाँव में है- वहाँ की संस्कति का एक अटूट सिलसिला।
बड़ी दिलचस्प बात बताई थी इम्फाल में मिली एक महिला ने। जिनको लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय के एक मणिपुरी छात्र से प्रेम हो गया था। वह छात्र शिक्षा पूरी करके इम्फाल लौटते समय इस महिला को अपनी पत्नी बनाकर साथ ले आया था। इस उत्तर भारतीय पत्नी ने जब अपनी सास को सबेरे सबेरे सिर पर टोकरा रखकर बाजार जाते देखा तो एक दिन, दो दिन, तीन दिन बीत जाने के बाद आखिर एक दिन उसे टोकरे के साथ सामान बेचने बाजार जाने से रोक दिया। सास चेहरे पर उदासी लिए दो-चार दिन रुकी रही, पर आखिर एक दिन वह फिर माइती बाजार की ओर चल ही दी। यह घटना धीरे-धीरे सास-बहू के बीच टकराव का कारण बन गई। अंततः एक दिन इस उत्तर भारतीय महिला के मणिपुरी पति ने उसे समझाया इसके पीछे कोई आर्थिक मजबूरी नहीं है। माइती बाजार हमारी समाज-व्यवस्था का, हमारी संस्कति का सदियों पुराना अंग है। माँ को वहाँ जाने दो, उसे रोको नहीं।
प्रश्न-
(क) प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।
(ख) मेघालय किन तीन पर्वतीय अंचलों में बँटा हुआ है
(ग) मेघालय की पारिवारिक व्यवस्था कैसी है इस व्यवस्था से मुख्य लाभ क्या है?
(घ) मेघालय में स्त्रियों की स्थिति कैसी हैं?

(ङ) माइती बाजार किसे कहा जाता है और क्यों?

(च) स्पष्ट कीजिए कि माइती बाजार मणिपुर की संस्कति है, आर्थिक विवशता नहीं।

(छ) मणिपुर की राजधानी का नाम लिखिए।

(ज) विधि शब्द के दो अर्थ लिखिए।

उत्तर-

(क) मणिपुरी संस्कृति माइती बाजार या अन्य उपयुक्त शीर्षक।

(ख) मेघालय खासी पर्वतमाला, गारो पर्वतमाला और जयंतिया पर्वतमाला नामक तीन अंचलों में बँटा हुआ है।

(ग) मेघालय की पारिवारिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक है। वहाँ स्त्रियों का वर्चस्व है। इस व्यवस्था का मुख्य लाभ यह है कि यहाँ स्त्री-शोषण की ऐसी घटनाएँ नहीं होतीं, जैसी देश के बाकी हिस्सों में होती हैं।

(घ) मेघालय में स्त्रियों की स्थिति बहुत उन्नत है। यहाँ स्त्रियों का वर्चस्व है। परिवार में स्त्रियों की सत्ता चलती है। भूमि, धन, संपत्ति सभी कुछ माँ से बेटी को मिलता है।वहाँ स्त्रियाँ अपना मनपसंद कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं।

(ङ) स्त्रियों के एक भरे-पूरे बाजार को माइती बाजार अर्थात माँ का बाजार कहा जाता है।दोपहर बाद अमीर-गरीब सभी स्त्रियाँ इस बाजार में सब्जी, कपड़े व अन्य सामान बेचने आती हैं और सामान बेचकर शाम को लौट जाती हैं। यह वहाँ की संस्कृति है।

(च) माइती बाजार मणिपुर की संस्कति है, आर्थिक विवशता नहीं। स्त्रियाँ सिर पर सब्जी,कपड़े और अन्य सामानों से भरी टोकरी उठाए इस बाजार में आती हैं और सामान बेचकर लौट जाती हैं। यह कार्य वे किसी आर्थिक विवशता से नही करती, क्योंकि इस बाजार में अमीर घरों की स्त्रियाँ भी सामान बेचने आती हैं।

(छ) इम्फाल।

(ज) कानून, कार्य करने का तरीका।

<u>५</u>

ज़ाकिर साहब के बारे में कुछ बातें अविस्मरणीय हैं। 13 मई 1967 को राष्ट्रपति का पद सँभालते हुए उन्होंने कहा था, ''सारा भारत मेरा घर है, मैं सच्ची लगन से इस घर को मज़बूत और सुंदर बनाने की कोशिश करूँगा, ताकि वह मेरे महान देशवासियों का उपयुक्त घर हो, जिसमें इंसाफ और खुशहाली का अपना स्थान हो।'' उनकी विनम्रता ऐसी थी कि उन्होंने कहा था, '' मैं स्वीकार करता हूँ कि हमारी जनता ने इस उच्चतम पद के लिए निर्वाचित करके मुझ पर,जो विश्वास प्रकट किया है, उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यह भावना इस वजह से और भी प्रबल हो जाती है कि भारत के महान सपूत डॉ0 राधाकृष्णन के बाद मुझसे इस पद को सँभालने के लिए कहा गया। मैं उनके क़दमों पर चलने की कोशिश करूँगा, लेकिन उनकी बराबरी कैसे कर सकूँगा?''

वे भारत के असली सपूत थे, इसका सबूत उन्होंने पदारूढ़ होने के एक दिन पहले, तब किया, जब वे दिल्ली में श्रृंगेरी के जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य से भेंट करने गए। जगद्गुरु के सामने पुष्प और फल रखते हुए उन्होंने कहा था– ''आपका आशीर्वाद चाहिए'' और शंकरचार्य ने राष्ट्रपति के सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दिया था। ऐसी ही एक और घटना याद आती है। उपराष्ट्रपति–निवास के अहाते में एक दिन सवेरे घूम रहे थे, तो देखा कि माली के घर में कीर्तन हो रहा है। फिर क्या था, टहलते हुए उधर चले गए और सबके साथ एक कोने में दरी पर बैठ गए। जब कुर्सी लाने को कहा गया तो बोले, 'भगवान के घर में सब बराबर होते हैं।'' और दरी पर ही बैठे रहे। पटियाला में पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरु गोविंद सिंह के संस्थान की नींव रखने को जब आपसे कहा गया, तो बोले,

“आपने मुझसे इस पवित्र संस्थान की नींव रखने को कहा है। इससे मुझे याद आता है कि अमृतसर में दरबार साहब की नींव डालने के लिए भी एक मुसलमान को ही बुलाया गया था।” और यह कहते–कहते उनका गला भर आया, आँखों से आँसू बहने लगे। बड़े–बड़े योद्धा सिक्ख सरदार श्रोताओं की भी उस समय आँखें भर आईं। अपने साफ–सुथरे सुरुचिपूर्ण खादी के कपड़ों और सुरुचि से सँवारी सफेद दाढ़ी के बीच चमकते हलके गुलाबी, गौरवर्ण मुखमंडल से ज़ाकिर साहब प्रेम और आत्मीयता में गांधी जी के अंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे। देश के आने वाले बच्चे बापू को भूल न जाएँ, इस संबंध में उन्होंने एक बार कहा था, “आप आज्ञा दें, तो इस अवसर से लाभ उठाकर गांधी जी के संबंध में कुछ आपसे कहूँ। इससे उनको जानने और समझने, उनके काम को समझने और उसमें जी जान से लगना ज़रा सरल हो सकता है। यह इसलिए और भी करना चाहता हूँ कि अब दिन–पर–दिन उन लोंगों की संख्या घट रही है, जिन्होने गांधी जी को देखा था, उनके साथ काम किया था, उनके बताए हुए रास्ते पर चले थे। जब के दुनिया से गए, तो ये लोग बच्चे थे।बहुत से पैदा भी नहीं हुए थे। उनकी गिनती अब दिन–पर–दिन बढ़ती ही जाएगी। नया काल होगा, नए हाल होंगें, नए जंजाल होंगें, ऐसा न हो कि यह नई नस्ल गांधी जी और उनके कार्यो की तह में जो विचार थे; उनको भुला बैठे। ऐसा हुआ, तो हमारी सबसे मूल्यवान पूँजी बरबाद हो जाएगी।” एक बार रामलीला में जनता ने उनसे रामचंद्र जी का तिलक करने के लिए कहा। ज़ाकिर साहब खुशी से आए और तिलक किया। इस पर कुछ उर्दू अख़बारों ने ऐतराज़ किया। ज़ाकिर साहब ने जवाब दिया “इन नादानों को मालूम नहीं है कि मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ, किसी खास धर्म का नहीं।”

प्रश्न–

(क) राष्ट्रपति पद सँभालते हुए डॉ0 ज़ाकिर हुसैन ने क्या कहा था?

(ख) जाकिर साहब ने सबसे पहले किससे आशीर्वाद प्राप्त किया और क्यों?

(ग) माली के घर ज़ाकिर उन्होंने क्या किया और क्यों?

(घ) किस विशेषता के कारण ज़ाकिर हुसैन गांधी जी के अंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे?

(ड़) उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(च) मूल्यवान पूँजी किसे कहा गया है और क्यों?

(छ) उर्दू अख़बार वालों ने किस कारण एतराज़ किया?

(ज) उर्दू अख़बार वालों को उन्होंने जो जवाब दिया, उससे ज़ाकिर जी बारे में क्या धारणा बनती है?

(झ) ‘जिसे भुलाया न जा सके’– इन अनेक शब्दों के लिए एक शब्द गद्यांश में से ढूँढ़कर लिखिए।

(ञ) ‘उनकी गिनती अब दिन–पर–दिन बढ़ती ही जाएगी’, वाक्य में से निपात छाँटकर लिखिए।

उत्तर–

(क) सारा भारत उनका घर है।वे सच्ची लगन से इस घर को मजबूत और सुंदर बनाने की कोशिश करेंगे,ताकि वह उनके महान देशवासियों का उपयुक्त घर हो,जिसमें इंसाफ और खुशहाली का अपना स्थान हो।

(ख) जाकिर साहब ने सबसे पहले दिल्ली में श्रृंगेरी के जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य से आशीर्वाद प्राप्त किया।वे भारत के असली सपूत थे तथासब धर्मों में विश्वास रखते थे।

(ग) माली के घर जाकर वे सबके साथ एक कोने में दरी पर बैठ गए। जब उनके लिए कुरसी लाई गई, तो उन्होने उस पर बैठने से मना कर दिया। उनका मानना था कि भगवान के घर में सब बराबर होते हैं।

(घ) वे साफ सुथरे खादी के कपड़े पहनते थे।उनके मुखमंडल पर तेज था।प्रेम और आत्मीयता में जाकिर साहब गांधी जी के अंतिम उत्तराधिकारी नजर आते थे।

(ड़) शीर्षक – समदर्शी जाकिर हुसैन।

(च) गांधी जी के कार्यों,विचारों तथा आदर्शों को मूल्यवान पूॅजी कहा गया है, क्योंकि उनके आदर्श तथा विचार उच्चकोटि के थे।

(छ) एक बार रामलीला में जनता के कहने पर जाकिर जी ने रामचंद्र जी का तिलक किया।इस पर कुछ उर्दू अखबारों ने एतराज किया।

(ज) जाकिर जी की सर्वधर्म भावना का पता चलता है। वे सभी धर्मों को एक समान समझते थे।
(झ) अविस्मरणीय।
(ञ) ही।

६

लेखक की मान्यता है कि वैदिक युग से ही भारत में नदियों की महत्व दिया जा रहा है। नदियों के किनारे ही हमारे देश के अधिकांश ग्राम, नगर तथा राजधानियाँ बसी हुई हैं। प्राचीनकाल में नदियाँ ही हमारे यातायत की मुख्य साधन थी तथा इनमें मानव तथा पशु समान रूप से विहार करते थे। जल अथवा वारि में विहार करने के कारण ही हाथी का नाम, वारन पड़ा था। हमारे देश में नदियों को देवियों का स्वरूप प्रदान कर गंगा व यमुना, चैव, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु,काविरी, जलोस्मिन सन्निधं करु स्मरण किया जाता है। इससे भारत की एकता का ज्ञान होता है।गंगा जो देश की सर्वाधिक पवित्र नदी थी आज अपने जल में विभिन्न नगरों तथा बड़े बड़े कारखानों की गन्दगी बटोरने के कारण दूषित हो गई है। इसी कारण गंगा सागर भी पहले के समान न रहकर सिकता मेवाओ में परिर्वैर्तत होता जा रहा है। यमुना की भी यही दुर्दशा हो रही है।

भारत अधिक नदियों के समूह में बंटा हुआ देश है, जैसे मध्यप्रदेश में गंगा-यमुना, पूर्व में ब्रह्मपुत्र-मेघना, पश्चिम में नर्मदा-ताप्ती, दक्षिण-पूर्व मे महानदी, दक्षिण मे कृष्णा-काविरी आदि। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भारत के अधिकांश नगर, शिक्षाकेन्द्र, व्यवसाय केन्द्र, मन्दिर आदि इन्ही नदियों में किनारो में बसे हुए है।

प्रश्न-

(क) नदियों को कब से महत्व दिया जा रहा है?
(ख) भारत में नदियों को किसका स्वरूप प्रकाश किया है?
(ग) भारत की एकता का ज्ञान कैसे होता है?
(घ) हाथी का नाम वारण कैसे पड़ा?
(ङ) भारत की सर्वाधिक पवित्र नदी कौन है और वह दूषित क्यों हो गई है?
(च) गंगा सागर किसमें परिवर्तित होता जा रहा है?
(छ) भारत के पूर्व में कौन-सी नदियों का समूह है?
(ज) नदी के दो पर्यायवाची बताइए।
(झ) नदियों के किनारे ही अधिकांश ग्राम, नगर और राजधानियाँ क्यों है?

अपठित काव्यांश

सामान्य निर्देशः—

1. पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
2. फिर प्रश्नों को पढ़कर दुबारा पद्यांश को पढ़ें।
3. दुबारा पढ़ते समय प्रश्नों के उत्तरों एवं मूल भाव को ध्यान में रखें।
4. सराहना एवं शिल्प सौंदर्य की दृष्टि से भी पद्यांश पढ़ें।
5. फिर कमबद्ध रूप से प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट और पूर्ण वाक्यों में लिखें।

१.

कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
भिन्न-भिन्न यदि देश हमारे तो किसका संसार
जरती को हम काटें छाँटे,
क्षो उस अंबर को भी बाँटें,
एक अनल है, एक सलिल है, एक अनिल संचार,
कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?
एक भूमि है, एक व्योम है
एक सूर्य है, एक सोम है
एक प्रकृति है, एक पुरुष है, अगणित रूपाकार,
कहो, तुम्हारी जन्मभूमि का है कितना विस्तार?

प्रश्न-

(क) देशों की भिन्नता को महत्व न देने के लिए कवि ने क्या तर्क दिए हैं?
(ख) धरती का देशों में विभाजन करने वाले के लिए क्या बाँट लेना असंभव है?
(ग) अनल और अनिल के अर्थ का अंतर स्पष्ट कीजिए।
(घ) कवि के मत में जन्मभूमि का विस्तार कितना है?

उत्तर-

(क) हवा, पानी, आकाश, सूर्य, चाँद आदि एक है। अतः देशो की भिन्नता महत्वहीन है।
(ख) आकाश का बँटवारा असंभव है।
(ग) अनल- आग, अनिल-हवा। अनिल की तीव्र गित से अनल भड़क उठी।
(घ) संपूर्ण संसार जन्मभूमि का ही विस्तार है।

2

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए
प्राणों के लाले पड़ जाए, त्राहि–त्राहि स्वर नभ में छाए
नाश और सत्यानाशों का धुआँधार जग में छा जाए
बरसे आग,जलद जल जाए, भस्मसात भूधर हो जाए
पाप–पुण्य सदसद भावों की धूल उड़ उठे दाएँ–बाएँ
नभ का वक्षस्थल फट जाए, तारे टूक हो जाएँ
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए।

प्रश्न–

क. उथल–पुथल मच जाने का क्या आशय है?
ख. कवि की कविता क्रांति लाने में किस प्रकार सहायक हो सकती है?
ग. कवि समाज में कैसी क्रांति चाहता है?
घ. `कविता से चार मुहावरे चुनकर लिखिए।

उत्तर–

क. उथल–पुथल मचने का अर्थ है सामाजिक क्रांति।

ख. कवि ऐसी सामाजिक क्राति चाहता है जिसमें कवि जन–मन को जागृत कर उसमें क्राति की चिंगारी फूँक सकता है।
ग. चारों ओर परिवर्तन हो, पाप–पुण्य और भले–बुरे भावों की चिंता न रहे।
घ. 1. प्राणों के लाले पड़ना, 2. आग बरसना 3. धूल उड़ना 4. टूक–टूक होना।

३.

मेरे घर में पाँच जोड़ी आँखें हैं
माँ की आँखें पड़ाव से पहले ही
तीर्थ-यात्रा की बस के
दो पंचर पहिए हैं।
पिता की आखें-
लोहंसाय की ठण्डी शलाखें है
बेटी की आँखे मन्दिर में दीवर पर
जलते घी के दो दिए हैं।
पत्नी की आँखें आँखें नहीं
हाथ हैं जो मुझे थामे हुए हैं।
वैसे हम स्वजन है, करीब हैं
बीच की दीवार के दोनों ओर
क्यैंकि हम पेशोवर गरीब है।

प्रश्न-
(क) कवि घर में कितने और कौन-कौन सदस्य है?
(ख) माँ की आँखों में पलता कौनसा अरमान अभी तक पूरा नहीं हो पाया है?
(ग) कवि को पत्नी की आँखों में हाथ होने का विश्वास कैसे होता है?
(घ) उपर्युक्त काव्यांश में किस समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया गया है?

उत्तर-
(क) कवि के घर में पाँच सदस्य है। वृद्ध माता-पिता, पुत्री, पत्नी तथा वह स्वयं है।
(ख) माँ की आँखों में तीर्थयात्रा करने का अरमान पूरा नहीं हो पाया है।
(ग) कवि के अभावग्रस्त जीवन में पत्नी ही उनकी परम सहयोगिनी है। जो उनके असहाय जीवन में सम्बल प्रदान करती है।
(घ) उपर्युक्त काव्यांश में गरीबी के कारण अभावग्रस्त पारिवारिक सम्बन्धों में आए बिखराव को इंगित किया है।

4

इन नए बसते इलाक़ों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए–नए मकान
मैं अकसर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर

और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का घर था इकमंजिला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता हूँ
यहाँ रोज़ कुछ बन रहा है
रोज़ कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे बसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाज़ा खटखटाओ
और पूछो–क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी, ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर।

प्रश्न–

(क) नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?
(ख) कविता में कौन–कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?
(ग) कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?
(घ) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया।

उत्तरः–

(क) नए बसते इलाके में रोज नए–नए मकान बनते हैं। परिवर्तन के कारण कवि रास्ता भूल जाता है।
(ख) 'पीपल का पेड़', 'ढहा हुआ घर','जमीन का खाली टुकड़ा' तथा 'इकमंजिला घर जिसका फाटक लोहे का बिना रंग वाला है'– ये सभी पुराने निशान हैं।–
(ग) शहरों में सभी परिवर्तन इतने जल्दी–जल्दी होते हैं कि व्यक्ति की बुद्धि चकरा जाती है और वह अपने ठिकाने तक पहुँचने में कठिनाई अनुभव करता है।
(घ) जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं होता।पल–पल बनती–बिगड़ती दुनिया में स्मृतियों के सहारे जिंदगी नहीं बिताई जा सकती।

पत्र लेखन

श्रेष्ठ पत्र की विशेषताएँ–

1.पत्र निष्कपट भाव से बातचीत की शैली में लिख जाना चाहिए।
2. पत्र आडंबर रहित एवं बनावटीपन से दूर होना चाहिए।
3. पत्र में शिष्टाचार का सावधानी से प्रयोग होना चाहिए।

4. पत्र की भाषा सरल, शिष्ट एवं स्वाभाविक होनी चाहिए।
5. पत्र में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए।
6. पत्र में पता, तिथि, सम्बोधन, अभिवादन एवं समापनादि सुस्पष्ट होना चाहिए।
7. अनावश्यक विद्वत्ता प्रदर्शन से बचना चाहिए।

औपचारिक पत्र

प्रश्न1. आपका नाम विशाल जैन है। पिताजी के स्थानांतरण के कारण आपकी नए विद्यालय में प्रवेश के लिए चरित्र प्रमाण पत्र की आवश्यकता है। चरित्र प्रमाण पत्र लेने हेतु अपने विद्यालय के प्राचार्य को पत्र लिखिए।

सेवा में
प्रधानाचार्य
क ख ग विद्यालय, जबलपुर
विषय–चरित्र प्रमाण पत्र लेने हेतु आवेदन–पत्र।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि मैं नवीं–ब का छात्र हूँ। मेरे पिताजी का स्थानांतरण इलाहाबाद हो गया है। मुझे वहॉ के विद्यालय में प्रवेश लेना है और इसके लिए चरित्र प्रमाण पत्र जमा कराना है।
अतः आपसे निवेदन है कि मुझे चरित्र प्रमाण पत्र प्रदान करने की कृपा करें।
धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
विशाल जैन
नवीं–ब
अनुक्रमांक–16
दिनांक–जुलाई 5,2008

अनौपचारिक पत्र (पारिवारिक पत्र)

प्रश्न 2. अपने मित्र को पत्र लिखिए जिसमें व्यायाम का महत्व बताया गया हो।

जबलपुर
दिनांकः...................
प्रिय मित्र
सप्रेम नमस्कार।

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर दुख हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मित्र! तुम्हे प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए। इससे शरीर के अनेक रोग स्वतः ही दूर हो जाते हैं। प्रातःकालीन व्यायाम हमें ताजगी से भर देता है। कहावत भी है– स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ

मस्तिष्क का निवास होता है। तुम प्रतिदिन एक घंटा व्यायाम में लगाओ इससे तुम्हे काफी लाभ होगा।
पत्र की प्रतीक्षा में।
तुम्हारा अभिन्न मित्र
क, ख, ग

अभ्यास प्रश्नः—

1. विमान दुर्घटना में आपके मित्र के भाई की मृत्यु हो गई। आप अपने मित्र को एक संवेदना पत्र लिखिए।
२- अपने क्षेत्र की पेयजल समस्या पर ध्यान आकृयट कराने हेतु जिला स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।
३- संपादक, दैनिक जागरण, नई दिल्ली को अपने क्षेत्र में जल आपूर्ति के संबंध में शिकायती पत्र लिखिए।
४- बीमारी के कारण परीक्षा न दे सकने वाले मित्र को प्रेरणा—पत्र लिखिए।
५- अपने विद्यालय में खेल का सामान मॅंगवाने के लिए प्राचार्य को पत्र लिखिए।

निबन्ध

निबंध लेखन के समय विद्यार्थियों को निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखनी चाहिए।
1. निबंध लेखन के लिए विषय का चयन बहुत सोच समझकर किया जाना चाहिए।
2. विषय से संबंधित सारी जानकारी एकत्र कर उसे सुव्यवस्थित एक रूपरेखा के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
3. निबंध को मुख्य तीन भागों में बांट लिया जाना चाहिए।
क. प्रस्तावना ख. विषय विस्तार ग. उपसंहार
4. प्रस्तावना किसी सूक्ति, विचार से शुरू कर उसे आकर्षक एवं रोचक बनाया जाना चाहिए।भूमिका छोटी परन्तु सारगर्भित हो।
5. विस्तार में विषय का वर्णन होना चाहिए। इसमें पूर्वापर कम हो। प्रत्येक अनुच्छेद एक दूसरे से सम्बद्ध हो।
6. उपसंहार में कही गई बातों का सारांश आ जाना चाहिए।

. पराधीन सपनेहु सुख नाहीं

(पराधीनता बहुत बड़ा कलंक है। पराधीन व्यक्ति कभी सुखी नहीं रहता। पराधीनता के क्या दोष है।)
'पराधीनता दुख महा, सुख जग में स्वाधीन' पराधीनता जीवन का सबसे बड़ा दुख है। पराधीन व्यक्ति को तो निज में भी चैन नही मिलता। पराधीन व्यक्ति सदैव दूसरों की कृपा पर जीता ओर दासता की बेड़ियों में पलता है। वह कभी आत्मनिर्भर नहों हो पता और दूसरों का मुँह जोहता रहता है। पराधीन व्यक्ति की

इच्छाएँ मर जाती हैं वह तो जड़वत् सिर झुकाए दुसरों की आज्ञा का पालन करता रहता है। पिंजरे का पक्षी विहार करना चाहता है अनंत आकाश की सीमा को छूना चाहना हैं, कड़वी निबौरी खाना और बहता पानी पीना चाहता है केवल पंख फड़फड़ाकर रह जाता है और अपने स्वामी से कह उठता है।

'आजाद मुझको कर दे, ओ कैद करने वाले
मैं बेजुबां हुँ कैदी मुझे छोड़ कर दुआ ले

पराधीनता से अकर्मण्यता का जन्म होता हैं। पराधीन व्यक्ति अपनी सारी क्षमताओं की खो बैठता है, उसकी सोचने समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है वह तो दूसरों के इशारों पर नाचने वाली एक कुठपुतली जैसा बनकर रह जाता है। वह शोषण का शिकार होता है, वह तो विरोध करने का साहस भी नहीं कर पाता। पराधीन व्यक्ति की स्थिति तो उस मशीन जैसी होती है जिसका संचालन कोई और करता है। पशु-पक्षी जगत या मनुष्य सभी स्वतंत्र रहना चाहते हैं बंधन किसी को पसंद नही, सभी मुक्ति का आकाश चाहते हैं, मुक्ति की हवाएँ चाहते और कष्त सहकर भी आजादी की साँसे लेना चाहते हैं। पराधीनता तो नरक की यातना है। नरक मे भला कौन रहता चाहता है। बुरे से बुरा और पापी व्यक्ति भी स्वर्ग की कामना करता है, नरक की नहीं। हम भारतीयों ने भी स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया। स्वाधीनता किसी भी राष्ट्र का गौरव हैं। स्वाधीनता हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाने से नहीं मिलती वह तो निरंतर संघर्ष करने से, वलिदान देने से प्राप्त होती हैं। स्वाधीनता का मूल्य आँका नही जा सकता। स्वाधीनता बलिदान मँागती है। दिनकर जी ने भी इसी भाव को व्यक्त करते हुए इस प्रकार लिखा हैं।

नत हुए बिना जो अशनि घात सहती है
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है

अभ्यास–प्रश्न

1. भारत हमारा सबसे न्यारा
    - क. भूमिका
    - ख. प्राचीन भारत की झांकी
    - ग. विविधताओं का देश
    - घ. अनेकता में एक्य भाव
    - ड. संस्कृति व भारतीयता
    - च. स्वदेश प्रेम की प्रवृत्ति
    - छ. हमारे कर्त्तव्य
    - ज. उपसंहार
2. प्रदूषण की समस्या
    - क. भूमिका
    - ख. प्रदूषण व पर्यावरण
    - ग. प्रदूषणः औद्योगिक विकास की देन
    - घ. पर्यावरण असंतुलन के घातक परिणाम
    - ड. आज के युग की समस्याः प्रदूषण
    - च. उपसंहार

3. विद्यार्थी और अनुशासन

क. विद्यार्थी और अनुशासन का अर्थ
ख. अनुशासन के प्रकार
ग. अनुशासन से लाभ
घ. अनुशासनहीनता के कारण
ड. समाधान

4. श्रम का महत्व

क. परिश्रम और भाग्य
ख. परिश्रम और सफलता
ग. परिश्रम और विकास
घ. शारीरिक और मानसिक परिश्रम
ड. परिश्रम के लाभ
च. उपसंहार

5. विद्यार्थी के जीवन में कंप्यूटर का बहुत अधिक महत्व है। उसका प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में है। दोनों पक्षों का विवरण देते हुए आप नकारात्मक प्रभाव से बचने के लिए सुझाव भी दीजिए।

6. आए दिन समाचार पत्रों में आतंकवाद से जुड़े अनेक समाचार होते है। आतंकवाद की समस्या क्यों है?इसके क्या कारण हैंतथा इसके कारण क्या क्या हानियॉ होती हैं? आप सोचकर लिखिए कि इससे छुटकारा कैसे पाया जा सकता है?

खण्ड–ग

1. क्रिया–भेद, अव्यय
2. पद परिचय
3. वाक्य विचार
4. वाच्य
5. अलंकार

1. क्रिया–भेद, अव्यय

क्रिया–भेद – कर्म के आधार पर

1. अकर्मक क्रिया – वाक्य के जिस क्रिया प्रयोग में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे–दौड़ना, सोना, हॅसना, रोना आदि।

विशेष– यहॉ क्रिया का प्रभाव सीधे कर्त्ता पर पड़ता है।

2. सकर्मक क्रिया – जहॉ पर वाक्य में क्रिया प्रयोग में कर्म की आवश्यकता पड़े अर्थात् बिना कर्म के क्रिया का अर्थ स्पष्ट न हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे– पढ़ना, लिखना, देखना

जैसे– मैं पुस्तक पढ़ रहा हूॅ।

रवि ने निशांत को बुलाया।

विशेष–

1. किसी क्रिया के साथ क्या, किसे, किसको आदि प्रश्न लगाने से जो उत्तर मिलता है वह कर्म होता है। साथ ही क्रिया की भी पहचान हो जाती है।
2. कभी–कभी कुछ सकर्मक क्रियाएँ अकर्मक रूप में भी प्रयुक्त कर दी जाती हैं, परन्तु उनकी पहचान सकर्मक ही होती है।
जैसे– वह पढ़ता है और वह पुस्तक पढ़ता है।
वह खेलता है और वह क्रिकेट खेलता है।

प्रश्न 1. क्रिया भेद पहचान कर लिखिए–

1. मैंने रमेश को गीत सुनाया।
2. रामलाल फल खाएगा।
3. मैंने आपको रूपए दिए।
4. उसने मुझे रसगुल्ले खिलाए।
5. बच्चा दौड़ रहा ळें

उत्तरः–

1. सकर्मक
2. अकर्मक
3. सकर्मक
4. सकर्मक
5. अकर्मक

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया–पद छाँटकर लिखिए–

(क) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
(ख) मेरी अध्यापिका पढ़ा रही है।
(ग) सुरेश चंडीगढ़ जाएगा।
(घ) बच्चे खाना खा चुके हैं।
(ड.) नेहा बाज़ार जाएगी।
(च) दादा जी समाचार सुना रहे हैं।
(छ) लड़की आँगन में सो रही है।

उत्तर–

(क) पढ़ रहा है।
(ख) पढ़ा रही है।
(ग) जाएगा।
(घ) खा चुके हैं।
(ड.) जाएगी।
(च) सुना रहे हैं।
(छ) सो रही है।

3. क्रिया पदों को रेखांकित करके उनके भेद भी लिखिए–

(क) बच्चे निबंध लिख रहे हैं।
(ख) लड़कियाँ दौड़ रही हैं।
(ग) मीता दूध पीकर बाज़ार गई।

(घ) माली पौधे लगा रहा है।
(ङ.) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
(च) गुरदीप ने पुस्तक पढ़ी।
(छ) छोटा बच्चा रोता है।
(ज) राम ने निबंध लिखा।
(झ) लड़की आँगन में सो रही है।

उत्तर–

(क) बच्चे निबंध लिख रहे हैं। – सकर्मक क्रिया
(ख) लड़कियाँ दौड़ रही हैं।– अकर्मक क्रिया
(ग) मीता दूध पीकर बाज़ार गई।– सकर्मक क्रिया

(घ) माली पौधे लगा रहा है।– सकर्मक क्रिया
(ङ.) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।– अकर्मक क्रिया
(च) गुरदीप ने पुस्तक पढ़ी।– सकर्मक क्रिया
(छ) छोटा बच्चा रोता है।– अकर्मक क्रिया
(ज) राम ने निबंध लिखा।– सकर्मक क्रिया
(झ) लड़की आँगन में सो रही है।– अकर्मक क्रिया

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में दी गई धातुओं के उचित रूप से कीजिए–

(क) मोहन ने कल रोहन को पुस्तक ....। (भेज)
(ख) मैं खाना .... रहा हूँ। (खा)
(ग) सभा में अनेक विद्वान .... हैं। (बैठ)
(घ) अध्यापिका ने बच्चों को ....। (पढ़)
(ङ.) सोहन खाना देकर ....गया। (चल)
(च) सीता ने चाय ....। (बन)
(छ) माँ भिक्षुक को भोजन ....है। (दे)
(ज) माली पौधों को .... रहा है। (सींच)
(झ) हलवाई मिठाई .... रहा है। (बन)
(ञ) प्रधानाचार्य जी कक्षा में ....। (आ)

उत्तर–

(क) भेजी
(ख) खा
(ग) बैठे
(घ) पढ़ाया
(ङ.) चला
(च) बनाई
(छ) देती
(ज) सींचता
(झ) बना

(ञ) आ गए

अभ्यास–प्रश्नः– निम्नलिखित वाक्यों मे से क्रियापद छाँटकर क्रिया–भेद भी लिखए–

(क) एक सफ़ेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे।

(ख) नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया।

(ग) ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है।

(घ) अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे।

(ड.) दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला।

(च) नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक–मिर्च के संयोग से चकमती खीरे की फाँकों की ओर देखा।

(छ) नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए।

(ज) जेब से चाकू निकाला।

(झ) गुरदीप ने पुस्तक पढ़ी।

(ञ) छोटा बच्चा रोता है।

(ट) राम ने निबंध लिखा।

(ठ) लड़की आँगन में सो रही है।

(ण) प्राचार्य जी ने सभा में भाषण दिय

<u>अविकारी शब्द (अव्यय)</u>

अव्यय शब्द का अर्थ है व्यय न होने वाला। विकारी का अर्थ है परिवर्तनशील। जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल आदि के कारण कोई विकार न आए उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते है।

अव्यय के भेद - अव्यय (अविकारी) पाँच प्रकार के होते हैं।

१. क्रिया विशेषण - यहाँ, वहाँ, धीरे-धीरे, अब, थोड़ा, बहुत, आगे, पीछे।

२. विस्मयादिबोधक - वाह!, ओह!, हाय!, चुप!, अरे!, सावधान!

३. समुच्चयबोधक - और, तथा, किन्तु, परन्तु, यद्यपि, एवं, ताकि।

४. सम्बन्धबोधक - के साथ, के ऊपर, के बिना।

५. निपात - ही, केवल, तक, तो, भी, मात्र, भर

प्रश्न1. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया–विशेषण पदों को रेखांकित करके उसका प्रकार भी बताइए–

(क) मोहन तेजी से दौड़ा।

(ख) मैं ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ।

(ग) वह मेरी बात चुपचाप सुन रहा था।

(घ) धर्म की सर्वत्र विजय होती है।

(ड.) सुधीर अचानक खड़ा हो गया।

(च) नेहा धीरे–धीरे चल रही थी।

उत्तरः–(क) मोहन <u>तेजी</u> से दौड़ा। – रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(ख) मैं <u>ध्यानपूर्वक</u> सुन रहा हूँ।– रीतिवाचक क्रियाविशेषण

(ग) वह मेरी बात <u>चुपचाप</u> सुन रहा था।– रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(घ) धर्म की <u>सर्वत्र</u> विजय होती है।– स्थानवाचक विशेषण
(ङ.) सुधीर <u>अचानक</u> खड़ा हो गया।– रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(च) नेहा <u>धीरे–धीरे</u> चल रही थी।– रीतिवाचक क्रियाविशेषण

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित अव्यय पद से कीजिए।

(1) मेरा घर विद्यालय .... है।
(2) धन .... कोई नहीं पूछता है।
(3) बालक चाँद .... देख रहा है।
(4) पेट्रोल के .... कार नहीं चल सकती।
(5) अच्छे चरित्र .... जीवन निरर्थक है।
(6) मोहन मित्रों .... सैर करने गया है।
(7) माँ बेटे .... घर जा रही थी।
(8) बंदर छत .... उछल–कूद मचा रहे थे।
(9) बच्चे कमजोर थे .... बीमार पड़ गए।
(10) सीता .... गीता सगी बहनें हैं।
(11) मैंने सोहन से पुस्तक माँगी .... उसने मना कर दिया।
(12) सभी जानते हैं................... पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है।
(13) गरिमा कमज़ोर थी, ... बीमार पड़ गई।
(14) ....! यह क्या हो गया।
(15) ....! तुम तो पीछे ही पड़ गए।

उत्तरः–

(1) के पास
(2) के बिना
(3) की ओर
(4) बिना
(5) के बिना
(6) के साथ
(7) के साथ
(8) पर
(9) इसलिए
(10) और
(11) लेकिन
(12) कि
(13) इसलिए
(14) अरे!
(15) अरे!

अभ्यास प्रश्नः–

रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित अव्यय पद से कीजिए।

(1) मैं दिल्ली से .... वापस आया हूँ।

(2) .... तुमने .... उन्नति की है।

(3) वह शीघ्र चला गया .... गाड़ी पकड़ सके।

(4) मैं मंच .... बैठा था।

(5) .... तेरे भाग्य में यही लिखा था।

(6) मोहन .... उसके पिता घूमने गए।

(7) पिता जी ने कहा था .... मन लगाकर पढ़ना।

(8) .... कोई है।

(9) मैं दिल्ली .... जा रहा हूँ।

(10) तुम्हें यह कार्य .... करना चाहिए था।

(11) तुम ....निराश हो गए।

(12) जीवन .... परिश्रम करना चाहिए।

(13) मैं स्कूल .... जा रहा हूँ।

(14) कुणाल .... बोल रहा है।

(15) वह .... खाना खा रहा है।

(16) करण काम करते–करते .... थक गया था।

(17) .... महंगाई बढ़ती जा रही है।

(18) बच्चो, ... मत जाओ।

२. पद परिचय

पद परिचय के अन्तर्गत वाक्य में प्रयुक्त पदों को अलग करके प्रत्येक पद कापरिचय दिया जाता है पद परिचय देते समय निम्नलिखित चार सोपानों का ध्यान रखा जाता है।

१. वाक्य के प्रत्येक पद को अलग-अलग करना।

२. प्रत्येक पद को भेदोपभेद के साथ प्रस्तुत करना।

३. वाक्य के अन्य पदों के साथ उनका सम्बन्ध बताना।

४. वाक्य में उनका कार्य बताना।

अर्थात् पद-परिचय में पद को अलग कर उसका नाम, भेद, लिंग, वचन, कारक तथा क्रिया के साथ उसका सम्बन्ध बताया जाता है।

विकारी-अविकारी शब्दों का पद-परिचय-

१. संज्ञा - भेद (जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक), लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ उसका सम्बन्ध।

२. सर्वनाम - भेद (पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्न वाचक, निजवाचक) लिंग, वचन, कारक, पुरुष तथा क्रिया के साथ उसका सम्बन्ध।

३. विशेषण - विशेषण के भेद (गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक), ि वशेष्य, लिंग, वचन।

४. क्रिया - भेद (अकर्मक, सकर्मक), लिंग, वचन, पुरुष, धातु, काल, वाच्य, प्रयोग, कर्त्ता और कर्म का संकेत।
५. क्रिया विशेषण - भेद (रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक, परिमाणवाचक), उस क्रिया का उल्लेख - जिसकी विशेषता बता रहा है।
६. समुच्चयबोधक - भेद (समानाधिकरण, व्यधिकरण), जिन शब्दों या पदों को मिला रहा है, उनका उल्लेख।
७. सम्बन्धबोधक - भेद, सम्बन्धित संज्ञा / सर्वनामों का उल्लेख।
८. विस्मयादिबोधक - भेद, भाव (हर्ष, शोक, भय, आश्चर्य, तिरस्कार, प्रशंसा, स्वीकार, आदर, अनादर आदि)
उदाहरण -
१. मानव ने कल मुझे अपने घर बुलाया है।
मानव - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'बुलाया है' क्रिया का कर्त्ता।
कल - क्रिया विशेषण, कालवाची, 'बुलाया है' क्रिया का विशेषण।
मुझे - सर्वनाम, पुरुषवाचक, एकवचन, पुल्लिंग, उत्तमपुरुष, 'बुलाया है' क्रिया का कर्म।
अपने - सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, घर विशेष्य।
बुलाया है- सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमानकाल कर्तरि प्रयोग, कर्त्तृवाच्य, बुला (बुलाना) धातु, मानव कर्त्ता, मुझे कर्म।
२. अरे वाह! तुम भी यहीं रहते हो।
अरे वाह! - विस्मयादिबोधक अव्यय, हर्षबोधक।
तुम - पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यमपुरुष, एकवचन, पुल्लिंग, कर्त्ताकारक, 'रहते हो' क्रिया का कर्त्ता।
यहीं - स्थानवाचक क्रिया विशेषण, 'रहते हो' क्रिया से सम्बन्ध।
भी - निपात
रहते हो - अकर्मक क्रिया, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, वर्तमान काल, एकवचन, 'रह' धातु, कर्तरि प्रयोग, कर्त्तृवाच्य, तुम कर्त्ता।

प्रश्न 1– रेखांकित पदों का व्याकरणिक या पद–परिचय लिखिए

1. जल्दी चलो, वरना गाड़ी छूट जाएगी।
2. लोग धीरे–धीरे उस संकरे रास्ते से ताजमहल की ओर बढ रहे थे।
3. कल हमने ताजमहल देखा।
4. जब मैं पहुँचा तो रमेश सो रहा था।
5. चिड़िया पिंजरे में बंद है।
6. भूकंप से हजारों की जाने गई।
7. जब भूकंप आया तो लोग सो रहे थे।
8. यह किताब मेरी है।
9. ईमानदारी बड़ी दुर्लभ वस्तु है।

उत्तरः—

1. जल्दी —अव्यय, क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'चलो' क्रिया की विशेषता।
2. धीरे—धीरे— अव्यय, क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'बढ़ रहे थे' क्रिया की विशेषता।
3. ताजमहल—संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मकारक।
4. सो रहा था— क्रिया, अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुल्लिंग, भूतकाल, 'रमेश' कर्त्ता की क्रिया।
5. चिड़िया — संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्त्ताकारक,'है' क्रिया का कर्त्ता।
6. भूकंप — संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, करणकारक।
7. सो रहे थे— क्रिया, अकर्मक क्रिया, बहुवचन, पुल्लिंग, भूतकाल, 'लोग' कर्त्ता की क्रिया।
8. यह — विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'किताब' विशेष्य का विशेषण
9. ईमानदारी — संज्ञा, भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग , कर्त्ताकारक, 'है' क्रिया का कर्त्ता ।

प्रश्न 2— रेखांकित पदों का व्याकरणिक या पद—परिचय लिखिए

1. भारत महान देश है।
2. प्रगीत दसवीं कक्षा में पास हो गया है।
3. वह घर गया।
4. मोहन पाँचवी कक्षा में पढ़ता है।
5. मेरी बात पर वह बहुत हँसा।
6. वह घर में छिपा है।
7. शोभा साइकिल से गई।
8. सोहन इसी घर में रहता है।
9. राजीव गांधी जी देश में स्वच्छ प्रशासन चाहते थे।
10. मैं नहा कर पुस्तक पढूँगा।
11. वह कल आएगा।
12. मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।

३. वाक्य-विचार

परिभाषा - सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह जिससे अपेक्षित अर्थ प्रकट हो, उसे वाक्य कहते हैं।

जैसे- (क) वर्षा हो रही है।

(ख) मैने एक मोटा व्यक्ति देखा जो बहुत तेज दौड़ रहा था।

यह शब्द समूह सार्थक, व्यवस्थित तथा पूरा आशय प्रकट कर रहा है। अतः यह एक वाक्य

है।
प्रश्न - वाक्य के भेद किन-किन आधार पर किए जाते हैं।
उत्तर - वाक्य के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं।
(क) रचना के आधार पर
(ख) अर्थ के आधार पर
प्रश्न - रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद है
उत्तर - रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं-
(क) सरल वाक्य या साधारण वाक्य
(ख) संयुक्त वाक्य
(ग) मिश्र या मिश्रित वाक्य
(क) सरल वाक्य (साधारण वाक्य) - सरल वाक्य उसे कहते है जिसमें एक उद्देश्य, एक विधेय और एक मुख्य समापिका क्रिया होती है।
जैसे - (१) बच्चा खेलता है।
(२) लड़के मैदान में गेंद से खेल रहे हैं।
(ख) संयुक्त वाक्य - जिस वाक्य में दो या दो अधिक साधारण वाक्य समानाधिकरण योजक अव्ययों द्वारा जुड़े हों और अर्थ के लिए एक दूसरे पर निर्भर न हों उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।
जैसे- (१) दिनकर जी आज प्रातः अपने घर गए और शाम को लौट आए।
(१) सत्य बोलो परन्तु कटु सत्य न बोलो।
(ग) मिश्र या मिश्रित वाक्य - इस वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य होते हैं जिसमे एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।
गौण उपवाक्य अपने पूर्ण अर्थ के लिए मुख्य उपवाक्य पर आश्रित होते है।
जैसे - (१) रहमान ने कहा कि वह मुंबई जा रहा है।
(२) यदि अच्छी वर्षा हुई तो अच्छी फसल होगी।
प्रश्न - उपवाक्य किसे कहते हैं
उत्तर - छोटे-छोटे वाक्यों से मिलकर एक पूरा वाक्य बनता है, वे उपवाक्य कहलाते हैं, जिस वाक्य में जितनी क्रियाएँ होती हैं, उतने ही उपवाक्य होते हैं।
प्रश्न - उपवाक्य कितने प्रकार के होते हैं
उत्तर - उप वाक्य दो प्रकार के होते हैं।
(१) प्रधान उपवाक्य (मुख्य)
(२) आश्रित उपवाक्य
(१) प्रधान उपवाक्य - वाक्य में उपवाक्यों में से जो वाक्य का केन्द्र होता है उसे प्रधान उपवाक्य कहते हैं।
(२) आश्रित उपवाक्य - वे उपवाक्य जो मुख्य (प्रधान) उपवाक्य के सहायक होते है और अर्थ को पूर्ण करने में सहायता देतें है, उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं।
प्रश्न - आश्रित उपवाक्य कितने प्रकार के होते हैं
उत्तर - आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं।
(१) संज्ञा उपवाक्य
(२) विशेषण उपवाक्य

(३) क्रिया विशेषण उपवाक्य

प्रश्न 1– रचना के आधार पर वाक्य–भेद का नामोल्लेख कीजिए–

1. मैं उस व्यक्ति को जानता हूँ, जिसने तुम्हारी साइकिल चुराई है।
2. प्रातःकाल होता है और चिड़ियाँ चहचहाने लगती हैं।
3. जो सबकी भलाई करता है, वह सबका प्रिय होता है।
4. जो समुद्र में गोता लगायेगा, वह ही मोती पाएगा।
5. जब भी जाना चाहो, आप चले जाना।

उत्तरः–

1. मिश्र वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य
4. मिश्र वाक्य
5. मिश्र वाक्य

प्रश्न 2– आश्रित उपवाक्य अलग करके बताइए कि वह किस प्रकार का है–

1. जब वह यहाँ आया, मैं सो रहा था।
2. वह आदमी जो कल आया था, मेरा मित्र है।
3. मैंने एक व्यक्ति देखा, जो बहुत लंबा था।
4. जब भी मैं वहाँ गया, उसने मेरा सत्कार किया।
5. उसने कहा कि मैं कल आगरा जाऊँगा।
6. वह पुस्तक जो आप चाहते हैं, लाइब्रेरी में नहीं है।
7. मेरा उद्देश्य है कि मैं मनुष्य मात्र की सेवा करूँ।
8. मैंने सोचा कि वह जरूर आयेगा।

उत्तरः–

1. जब वह यहाँ आया–क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य
2. जो कल आया था– विशेषण आश्रित उपवाक्य
3. जो बहुत लंबा था– विशेषण आश्रित उपवाक्य
4. जब भी मैं वहाँ गया– क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य
5. मैं कल आगरा जाऊँगा–संज्ञा आश्रित उपवाक्य
6. जो आप चाहते है– विशेषण आश्रित उपवाक्य
7. मैं मनुष्य मात्र की सेवा करूँ –संज्ञा आश्रित उपवाक्य
8. वह जरूर आयेगा–संज्ञा आश्रित उपवाक्य

प्रश्न 3– निर्देशानुसार रचना के आधार पर वाक्य परिवर्तन कीजिए–

1. आप द्वार पर बैठकर उसकी प्रतीक्षा करें। (संयुक्त)
2. वह अपराधी था, इसलिए उसको सजा मिली। (मिश्र)
3. तुम वहाँ चले जाओ, जहाँ गाडी रुकती है। (सरल)
4. सच बोलने वाले व्यक्ति को कोई नहीं डरा सकता (मिश्र)
5. अपराधी होने के कारण उसे सजा मिली। (मिश्र)

6. प्रातःकाल होने पर चिड़ियाँ चहचहाने लगीं। (संयुक्त)
7. माँ के मारने से बालक रूठ गया। (संयुक्त)
8. मजदूरों को अपनी मेहनत का लाभ नहीं मिलता। (संयुक्त)
9. संगम उस स्थान को कहते हैं, जहाँ दो नदियाँ आकर मिलती हैं। (सरल)

उत्तरः–

1. आप द्वार पर बैठें और उसकी प्रतीक्षा करें।
2. जो अपराधी था, उसको सजा मिली।
3. तुम गाड़ी रूकने के स्थान पर चले जाओ।
4. जो सच बोलता है, उस व्यक्ति को कोई नहीं डरा सकता।
5. जो अपराधी था, उसे सजा मिली।
6. प्रातःकाल हुआ और चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।
7. माँ ने मारा और बालक रूठ गया।
8. मजदूर मेहनत करते हैं और उसको मेहनत का लाभ नहीं मिलता।
9. दो नदियों के मिलने के स्थान को संगम कहते हैं।

अभ्यास प्रश्नः–

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित उपवाक्य का नाम बताइए–

1. मुझे विश्वास है कि रेखा अवश्य उत्तीर्ण होगी।
2. मैंने एक फूल देखा, जो खिल रहा था।
3. सभी जानते हैं कि वह विद्ववान है।
4. यह वही व्यक्ति है, जिसने कल मुझे गिरने से बचाया था।
5. जहाँ–जहाँ मैं गया, मेरा आदर–सत्कार हुआ।
6. जब तुम स्टेशन पर पहुँचे, तब मैं घर से चला।

प्रश्न 2. आश्रित उपवाक्य अलग करके बताइए कि वह किस प्रकार का है–

1. हमें चाहिए कि हम केवल बातों में ही समय नष्ट न करें।
2. तथागत ने कहा, तुम्हें अपना दीपक स्वंय बनना है।
3. वह जानता है कि मैं क्या चाहता हूँ।
4. गीता में कहा गया है कि कर्म पर ही मनुष्य का अधिकार है।
5. ज्यों ही मैं स्कूल से बाहर आया, वर्षा शुरू हो गई।
6. उसने कहा तो था, किन्तु वह आया नहीं।
7. इन्हें क्षमा करें, क्योंकि इनसे अनजाने में भूल हुई है।
8. आप यहाँ के मुखिया हैं कौन नहीं जानता।
9. रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है।
10. उनको यकीन है, कभी खुदा यूँ ही उनपर मेहरबान होगा।
11. अंदर से हूक उठती है कि ऐसा आदमी, अब फिर नहीं आयेगा।
12. छोटे बच्चे थे, तभी मामू के पास बनारस आ गए थे।
13. जैसी शहनाई और उसका बजाना था, वैसा ही उनका जीवन था।

४. वाच्य

वाच्य परिवर्तन
(१) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन -
कर्मवाच्य में कर्म प्रधान और कर्त्ता गौण हो जाता है।
(क) कर्त्ता को करण या माध्यम के रूप में, से, के द्वारा आदि लगाकर व्यक्त किया जाय।
जैसे - राम के द्वारा पत्र पढ़ा गया।
(ख) कभी-कभी कर्मवाच्य बनाने में कर्त्ता का लोप कर दिया जाता है।
जैसे - वह पतंग उड़ाता है।
पतंग उड़ती है।
(ग) कर्मवाच्य बनाते समय संयोजी क्रिया जाना (पुरुष लिंग वचन) के अनुसार प्रयोग किया जाता है। अर्थात् 'जाना' क्रिया का एक रूप जोड़ दिया जाय।
जैसे - दूध पिया जा रहा है।
(घ) कर्मवाच्य की मुख्य क्रिया को भूतकाल में परिवर्तन कर देते हैं।
(ङ) कर्म के साथ कोई विभक्ति चिह्न लगा हो तो उसे हटा दिया जाता है।
(२) कर्तृवाच्य से भाव वाच्य में परिवर्तन -
(क) भाववाच्य में कर्म नही होता। मूल कर्त्ता की ही दो स्थितियाँ होती हैं।
(ख) 'से' का प्रयोग नहीं होता।
(ग) भाववाच्य में क्रिया सदैव एकवचन, पुलिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में होती है।
उदाहरण-
कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य
कर्तृवाच्य कर्मवाच्य
१. मोहन शिकार करता है। मोहन के द्वारा शिकार किया जाता है।
२. प्रधानमंत्री ने भवन का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री द्वारा भवन का उद्घाटन किया गया।
३. मजदूर पेड़ काटेंगे। मजदूरो द्वारा पेड़ काटे जाएंगे।
४. तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की। तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस की रचना की गयी।
कर्तृवाच्य से भाववाच्य
कर्तृवाच्य भाववाच्य
१. तुम इतना कष्ट सह नहीं सकते। तुमसे इतना कष्ट सहा नहीं जा सकता।
२. आओ, अब चलें आओ, अब चला जाए।
३. हम लोग रोज नहाते हैं। हमसे रोज नहाया जाता है।
४. मै इस गरमी में सो नहीं सकता मुझसे इस गर्मी में सोया नहीं जा सकता।

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बताइए—

(क) मुझसे चला नहीं जाता।
(ख) राम अभी नहीं सोया।
(ग) मजदूरों ने एक साल में यह पुल तैयार किया।
(घ) चलो, अब चला जाए।

(ङ.) नर्तकियों द्वारा सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया गया।
(च) बच्चों से हँसा नहीं गया।
(छ) मैं बैठ नहीं सकता।

उत्तरः–

(क) भाववाच्य।
(ख) कर्तृवाच्य।
(ग) कर्तृवाच्य।
(घ) भाववाच्य।
(ङ.) कर्मवाच्य।
(च) भाववाच्य।
(छ) कर्तृवाच्य।

2. निम्नलिखित वाक्यों को कर्तृवाच्य में बदलिए–

1. माली के द्वारा पौधों को पानी दिया गया।
2. अध्यापक द्वारा बच्चों को पढाया गया।
3. मेरे द्वारा निबंध लिखा गया।
4. मालिक के द्वारा नौकर को डाँटा गया।
5. मेरे द्वारा खाना खाया जाएगा।

उत्तरः–

1. माली ने पौधों को पानी दिया।
2. अध्यापक ने बच्चों को पढाया।
3. मैने निबंध लिखा।
4. मालिक ने नौकर को डाँटा।
5. मैं खाना खाउँगा।

3. नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए–

1. माँ बैठ नहीं सकती।
2. चलो, अब सोते हैं।
3. माँ रो भी नहीं सकती।
4. लड़के खेलेंगे।
5. पक्षी आकाश में उड़ते हैं।

उत्तरः–

1. माँ से बैठा नहीं जाता।
2. चलो, अब सोया जाए।
3. माँ से रायो भी नहीं जा सकता।
4. लड़कों से खेला जाएगा।
5. पक्षियों से आकाश में उडा ज़ाता है।

4. निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए–

1. वह अपनी छोटी–सी दुकान में उपलब्ध गिने–चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।
2. पानवाला नया पान खा रहा था।
3. पानवाले ने साफ बता दिया था।
4. ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे।
5. नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।

उत्तरः–

1. उसके द्वारा अपनी छोटी–सी दुकान में उपलब्ध गिने–चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर दिया जाता है।
2. पानवाले के द्वारा नया पान खाया जा रहा था।
3. पानवाले के द्वारा साफ बता दिया गया था।
4. ड्राइवर के द्वारा ज़ोर से ब्रेक मारे गए।
5. नेताजी के द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

अभ्यास प्रश्नः–

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों के वाच्य बताइए–

1. पंजाब में रोटी खाई जाती है।
2. बच्चे मैदान में फुटबाल खेलते हैं।
3. आज बच्चों को इनाम मिलेगा।
4. रात भर कैसे जागा जाएगा।
5. भगवान सबकी रक्षा करते हैं।
6. आपको यह बात बताई गई है।

प्रश्न 2. निर्देशानुसार वाच्य बदलिएः–

1. बच्चे निबंध लिख रहे हैं।
2. मैं नहीं हँस सकता।
3. लड़कों के द्वारा खूब पढ़ा गया।
4. मैने वह दृश्य नहीं देखा।
5. आज घूमने चलें।

५. अलंकार

शब्दालंकार

अनुप्रास - अनुप्रास, शब्द का अर्थ है- किसी वस्तु को अनुक्रम में रखना। जिस रचना में व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक या अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे- कल कानन कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल बिराजति है।

यमक - वहै शब्द पुनि-पुनि परै, अर्थ भिन्न ही भिन्न अर्थात् जब कविता में एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आए और हर बार उसका अर्थ भिन्न हौ, वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे - काली घटा का घमंड घटा।

(घटा- वर्षाकाल की मेघमाला, घटा- कम हुआ)

श्लेष - श्लेष का अर्थ है चिपकना। जहाँ शब्द तो एक ही बार प्रयुक्त किया जाए, पर उसके एक से अधिक अर्थ निकलें, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

जैसे - मधुबन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ।

(कली- खिलने से पूर्व फल की दशा, योवन पूर्व की अवस्था)

अर्थालंकार

उपमा - किसी प्रसिद्ध वस्तु की समानता के आधार पर जब किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, गुण, धर्म का वर्णन किया जाता है, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

जैसे- हाय। फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की ढेरी थी।

रूपक - जहाँ रूप और गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद आरोप कर दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

जैसे - मैया मैं तो चंद्र खिलौना लै हौं।

(यहाँ चन्द्रमा (उपमेय) में खिलौना (उपमान) का आरोप होने से रूपक अलंकार है।)

उत्प्रेक्षा - जहाँ रूप, गुण आदि की समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसके वाचक शब्द है- मनु, मानो, जनु, ज्यों, जानो आदि।

जैसे- कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।

हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।

अतिशयोक्ति - जहाँ किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए अथवा किसी की प्रशंसा इतनी बढ़ा-चढ़ा कर की जाए कि वह लोकसीमा के बाहर की हो तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे- आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।

अन्योक्ति - जहाँ उपमान (अप्रस्तुत) के वर्णन के माध्यम से उपमेय (प्रस्तुत) का वर्णन किया जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। इसे अप्रस्तुत प्रशंसा भी कहा जाता है।

जैसे- जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सुबीति बहार।

अब, अलि रही गुलाब में, अपत कँटीली डार।।

पुनरुक्ति प्रकाश - काव्य में जहाँ एक शब्द की क्रमशः आवृत्ति तो हो, पर अर्थ भिन्नता न हो, वहाँ पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग माना जाता है। उदाहरण-सूरत है जग का बुझा-बुझा।

मानवीकरण - जहाँ किसी अचेतन वस्तु को मानव के समान आचरण करते हुए दिखाया जाय तो वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे- बीती विभावरी जाग री

अम्बर पनघट में डुबो रही ताराघट उषा नागरी।

प्रश्न—निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइए —

1. सिंधु—सा विस्तृत और अथाह, एक निर्वासित का उत्साह।
2. गोपी पद—पंकज पावन की रज जामैं सिर भीजैं।
3. एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।
4. कल कानन कुंडल मोर पखा उर पै बनमाल विराजति है।
5. कनक कनक ने सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
यह पाए बौराय है, वह खाए बौराय।।
6. बढत—बढत संपत्ति सलिल, मन—सरोज बढ जाइ।
7. मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए।।
8. रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरौ, मोती, मानुष, चून।।
9. जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कंटीली डार।।
10. कहती हुई यों उत्तरा के, नेत्र जल से भर गए।
हिम के कणों से पूर्ण मानों, हो गए पंकज नए।।
11. संसार की समर—स्थली में धीरता धारण करो।
12. प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि।
कालिका—सी किलकि कलेऊ देती काल को।
13. तरनि तनुजा तट—तमाल तरूवर बहु छाए।
14. चरण कमल बंदौं हरिराई।
15. ले चला मैं तुझे कनक, ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण—झनक।

उत्तरः—

1. उपमा।
2. रूपक।
3. रूपक।
4. अनुप्रास।
5. यमक।
6. रूपक।
7. अनुप्रास।
8. श्लेष।
9. अन्योक्ति।
10. उत्प्रेक्षा।
11. रूपक।
12. अनुप्रास।
13. अनुप्रास।
14. रूपक।

15. उत्प्रेक्षा।

अभ्यास प्रश्नः–

प्रश्न–निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार बताइए –

1. हरिपद कोमल कमल–से।
2. तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।
3. निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है।
4. पीपर पात सरिस मन डोला।
5. यवन को दिया दया का दान।
6. कुटिल, कुचाल, कुकर्म छोड़ दे।
7. विकसे सं सरोज सब।
8. मंगन को देखि पट देत बार–बार।
9. वह उठती उर्मियों–सी शैलमालाएँ।
10. लो यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गागरी।
11. जो रहीम गति दीप की,कुल कपूत गति सोय।
    बारै उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय।।
12. मधुबन की छाती को देखो, सूखी कितनी इसकी कलियाँ।
13. मेघ आए बड़े बन–ठन के सँवर के।
14. मैया, मैं तो चंद्र–खिलौना लैहौं।
15. वन शारदी चंद्रिका–चादर ओढ़े।

क्षितिज भाग-२

(काव्य खण्ड)

१.सूरदास (पद)

प्रथम पद

1. उधौ, तुम हौ अति ------ चाँटी ज्यौं पागी।

अथर्ग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-

१. गोपियों द्वारा उद्धव को बड़भागी कहने में क्या व्यंग्य निहित है

उत्तर- गोपियाँ व्यंग्य भाषा में उद्धव को नीचा दिखाने के लिए कहती है कि वे श्रीकृष्ण के सान्निध्य में रहकर उनके प्रेम बंधन में नहीं पड़े हैं।

२. उद्धव ने व्यवहार की तुलना किस किस से की गई है

उत्तर- उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते और तेल की बूँद से किया गया है। जो श्रीकृष्ण के नजदीक रहकर भी निर्लिप्त और अनासक्त है।

३. उद्धव कौनसा कार्य नहीं करने के कारण सुखी है

उत्तर- उद्धव ने ना तो प्रीतिरूपी नदी में पाँव डुबोया है और ना ही उनकी दृष्टि पर किसी के

रूप का पराग चढ़ा है। इस कारण उद्धव सुखी है।
४. गोपिकाओं ने स्वयं की तुलना किससे की है?
उत्तर- गोपिकाओं ने स्वयं की तुलना चींटी से की है।
काव्य सौन्दर्य-सराहना सम्बन्धी मुख्यबिन्दु-
१. उक्त काव्यांश में ब्रज भाषा है तथा पद छन्द में लिखा गया है।
२. श्रृंगार रस के वियोग पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति है।
३. प्रीति-नदी में रूपक अलंकार है।
४. पुरइनि पात में अनुप्रास अलंकार है।
५. ज्यौंजल माँह तेल की गागरि तथा 'गुर चाँटी ज्यौं पागी' में उपमा अलंकार है।
६. संगीतात्मकता के कारण लय और तुक का समन्वय है।

२. मन की मन ------- मरजादा न लही।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-
१. गोपिकाओं को अभिलाषाएँ मन में ही क्यों रह गई?
उत्तर- श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम होने के कारण प्रेम भरी बातें गोपिकाएँ किसी और से नहीं कह सकती थी।
२. गोपिकाओं की विरहाग्नि क्यों बढ़ गई?
उत्तर- श्रीकृष्ण के आने के बजाय उद्धव के योग सन्देश को सुनने से गोपिकाओं की विरहाग्नि बढ़ गई।
३. गोपिकाएँ रक्षा की गुहार क्यों लगाना चाहती है?
उत्तर- गोपिकाएँ ज्ञान-योग की प्रबल धार से बचने के लिए श्रीकृष्ण की गुहार लगाना चाहती है।
काव्य सौन्दर्य-सराहना सम्बन्धी मुख्यबिन्दु-
१. उपर्युक्त काव्यांश ब्रजभाषा के पद छन्द में है।
२. गोपियों की वाग्विदग्धता-वाक्चातुर्य की अभिव्यक्ति हुई है।
३. सुनि-सुनि में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।
४. उपर्युक्त पद में वक्रोक्ति अलंकार है।
५. मन की मन ही माँझ, अवधि आधार आस आवन तथा धीर धरिहं में अनुप्रास अलंकार है।

३. हमारैं हरि ------ मन चकरी।

अर्थ ग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-
१. हारिल पक्षी की क्या विशेषता है?
उत्तर- हारिल एक ऐसा पक्षी है जो अपने पैरों में सदैव एक लकड़ी लिए रहता है, उसे छोड़ता नहीं है।
२. गोपिकाओं ने कड़वी ककड़ी के समान किसे बताया है?
उत्तर- गोपिकाओं ने योग को कड़वी ककड़ी के समान बताया है।
३. गोपियाँ उद्धव को योग का सन्देश किन्हें देने की सलाह देती है?

उत्तर- गोपियाँ योग का सन्देश उन्हें देने के लिए कहती है। जिनका मन चकरी के समान चंचल औरअस्थिर है।

काव्य सौन्दर्य-सराहना सम्बन्धी मुख्यबिन्दु-

१. हारिल की लकड़ी में उपमा अलंकार है।

२. करुई ककड़ी, हमारै हरि हारिल तथा नंद-नंदन मे अनुप्रास अलंकार है।

३. कान्ह-कान्ह में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।

४. नंद-नंदन विशेषण श्रीकृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ है।

५. सनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी, पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

४. हरि हैं राजनीति ------ प्रज्ञान जाहिं सताए

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-

१. श्रीकृष्ण ने किसकी शिक्षा ग्रहण कर ली है?

उत्तर- श्रीकृष्ण ने राजनीति की शिक्षा ग्रहण कर ली है।

२. पहले और अब के लोगों में क्या अन्तर किया गया है?

उत्तर- पहले के लोग दूसरो के भले या कल्याण के लिए दौड़ते-फिरते थे, मगर आज ऐसा नहीं है।

३. गोपियों के अनुसार सच्चा राजधर्म क्या है?

उत्तर- गोपियों के अनुसार सच्चा राजधर्म राजा द्वारा प्रजा को नहीं सताना है। राजा प्रजा के साथ अन्याय नहीं करें।

काव्य सौन्दर्य-सराहना सम्बन्धी बिन्दु-

१. गोपियों द्वारा राजधर्म की याद दिलाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है।

२. चलत-चुराए व बढ़ी बुद्धि में अनुप्रास अलंकार है।

३. जोग और धरम का तत्सम रूप योग और धर्म है।

पाठ्य् पुस्तक के विषयवस्तु, सन्देश, जीवन मूल्यों पर आधारित प्रश्न-

१. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर- गोपियों के अनुसार राजा का धर्म प्रजाहित होना चाहिए। राजा को अपने राज्य में ध्यान रखना चाहिए कि उसके राज्य में प्रजा को सताया न जाए। प्रजा पर किसी प्रकार का अन्याय न हो।

२. सूरदास के भ्रमर गीत की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- सूरदास के भ्रमर गीत की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित है-

(क) भ्रमर गीत में निर्गुण पर सगुण की, योग पर भक्ति की तथा ज्ञान पर प्रेम की विजय बतायी गई है।

(ख) भ्रमर गीत अत्यन्त मर्मस्पर्शी तथा वियोग वर्णन की दृष्टि से अद्वितीय है।

(ग) गोपियों का वाक् चातुर्य स्पष्ट दिखाई देता है।

(घ) सूरदास की भक्ति-पद्धति, प्रेम की महत्ता एवं निर्गुण भक्ति के खण्डन की अभिव्यक्ति हुई है।

अभ्यास प्रश्नः–

१. गोपीयों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

२. गोपियों का योग साधना के प्रति क्या दृष्टिकोण है?
३. गोपियों ने वाक्-चातुर्य से ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, गोपियों के वाक् चातुर्य में ऐसी कोन सी शक्ति थी, जो मुखरित हो उठी।?
४. श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों की भक्ति का कैसा स्वरूप है?

२. तुलसीदास

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद -

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-

क. लखन कहा हँसि............. बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्हीं।।
१. कवि और कविता का नाम बताइए?
उत्तर- तुलसीदास। राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद
२. लक्ष्मण ने हँसकर परशुराम से क्या कहा?
उत्तर- लक्ष्मण ने हँसकर परशुराम से कहा कि हमारे लिए तो सब धनुष एक जैसे हैं। राम ने तो इसे नया समझकर छुआ था और यह छुते ही दूट गया। आपका क्रोध अकारण है।
३. लक्ष्मण की बातों की परशुराम पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
उत्तर- लक्ष्मण की बातें सनकर परशुराम और भी अधिक क्रोधित हो गए और उन्हाने लक्ष्मण से कहा कि मैं क्षत्रियकुल का शत्रु हूँ और बहुत बार अपने भुजबल से इस पृथ्वी को राजाविहीन कर चुका हूँ।
४. परशुराम के कथन के आधार पर उनके चरित्र की किन विशेषताओं का पता चलता है?
उत्तर- परशुराम की विशेषताएँ- क्षत्रियों के विरोधी, अत्यंत क्रोधी, अहंकारी एवं योद्धा।
५. उपर्युक्त पंक्तियों के शिल्प सौंदर्य पर प्रकाश डालिए-
उत्तर- अवधी भाषा, चौपाई छद, लक्ष्मण की व्यंग्योक्तियाँ, अनुप्रास अलंकार, रौद्र रस, ओज गुण।

(ख) लखन उत्तर आहुति................ बोले रघुकुलभानु।।
१. कवि एवं कविता का नाम बताइए।
उत्तर- तुलसीदास। राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद
२. कोप-कृसानु में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए।
उत्तर- रूपक अलंकार (कोप रूपी आग)
३. प्रस्तुत पंक्तियों का शिल्प सौंदर्य बताइए।
उत्तर- अवधी भाषा, दोहा छेंद, आलंकारिकता एवं गेयता, ओजगुण। अवसरानुकूल राम की विनयशीलता एवं लक्ष्मण की उग्रता।

विषय -बोध पर आधारित प्रश्नोत्तर-
१. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन कौन से तर्क दिए?
उत्तर- (क) हमने बचपन में तो बहुत से धनुष तोड़े हैं, किन्तु मुनि ने तब तो कभी क्रोध नहीं किया।
(ख) हमारी नजर में तो सभी धनुष एक जैसे ही हैं।
(ग) इस एक धनुष के टूट जाने से क्या हानि और क्या लाभ है?
(घ) श्रीराम ने तो इसे नया धनुष समझ कर देखा था।

२. लक्ष्मण ने वीर-योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं?
उत्तर- (क) वीर योद्धा आत्म प्रशंसा नहीं करते, वे कर्म करते हुए अपना पराक्रम दिखाते हैं।
(ख) वीर को गाली देना शोभा नहीं देता।
(ग) शूरवीर युद्धभूमि में शत्रु को सामने पाकर वीरता दिखाते हैं, प्रलाप नहीं करते।

अभ्यास प्रश्नः—
१. लक्ष्मण की कटुक्तियाँ सुनकर परशुराम ने क्या-क्या कहा?
२. इस कविता से हमे क्या संदेश मिलता है?
३. हमें क्रोध क्यों नहीं करना चाहिए?

३. देव

सुवैया

पाँयनि नुपुर मंजु--------- देव सहाई।
अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-
१. प्रस्तुत सवैया किस कवि द्वारा रचित है?
उत्तर- प्रस्तुत सवैया देव कवि द्वारा रचित है।
२. इस सवैयों में श्रीकृष्ण का कौनसा रूप सामने आया है?
उत्तर- कृष्ण के लौकिक रूप की अपेक्षा सामन्ती वैभव का रूप सामने आया है।
३. श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।
उत्तर- श्रीकृष्ण के पैरों में घुंघुरू, कमर में करधनी, साँवले अंगो पर पीले वस्त्र, गले में वनमाला, मस्तक पर मुकुट, चंचल-वड़े नेत्र तथा मुख रूपी चन्द्रमा से चाँदनी हिटक रही है।
४. देव श्रीकृष्ण के किस रूप के दूल्हा स्वरूप से सहायता की कामना करते है?
उत्तर- देव श्रीकृष्ण के ब्रज के दूल्हा स्वरूप से सहायता की कामना करते है।
काव्य सौन्दर्य-सराहना सम्बन्धी बिन्दु-
१. प्रस्तुत काव्यांश सवैया छन्द में है।
२. ब्रज भाषा है।
३. मुखचन्द व जग मन्दिर में रूपक अलंकार है।
४. कटि किंकिनि कै धुनि में अनुप्रास अलंकार है।
५. श्रीकृष्ण की वेशभूषा और उनके शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन है।
६. श्रृंगार रस है।
कवित्त-१
डार द्रमु पलना ----------- गुलाब चटकरी दै।

अर्थ ग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-
१. प्रस्तुत कवित्त में किसका चित्रण है?
उत्तर- प्रस्तुत कवित्त में राज कामदेव के बालक वसन्त का चित्रण हैं।
२. वसन्त रूपी बालक की नजर कौन उतार रहा है?
उत्तर- वसन्त रूपी बालक की नजर कमल की कली रूपी नायिका उतार रही है।

३. बालक वसन्त को प्रातः काल चुटकी बजा बजाकर कौन जगाता है?
उत्तर- बालक वसन्त को गुलाब प्रातः काल चुटकी बजा बजाकर जगा रहा है।
काव्य सौन्दर्य-सराहना सम्बन्धी बिन्दु-
१. प्रस्तुत काव्यांश ब्रज भाषा के कवित्त छन्द में है।
२. 'कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।' में रूपक और मानवीकरण अलंकार है।
३. पूरित पराग सौं उतारो ... में अनुप्रास अलंकार है।
४. वात्सल्य रस है।

कवित्त-२

फटिक सिलानि ----- सो लगत चंद।
अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-
१. पूर्णिमा की रात्रि में महल कैसे दिखाई देते है?
उत्तर- पूर्णिमा की रात्रि में फैली स्वच्छ चाँदनी में महल ऐसे दिखाई देते है जो सफेद संगमरमर (स्फटिक) के बने हो।
२. बाहर और भीतर तक दीवार क्यों नहीं दिखाई देती?
उत्तर- पूर्णिमा की रात में चाँदनी के उज्ज्वल होने कारण बाहर-भीतर दीवार नहीं दिखाई देती।
३. पूर्णिमा की रात में चाँद किसका प्रतिबिम्ब लगता है?
उत्तर- पूर्णिमा की रात में चाँद राधिका का प्रतिबिम्ब लगता है।
काव्य सौन्दर्य-सराहना सम्बन्धी बिन्दु-
१. प्रस्तुत काव्यांश की भाषा ब्रज तथा कवित्त छन्द है।
२. पूरे कवित्व में अनुप्रास और उपमा अलंकार का सौन्दर्य दर्शनीय है।
३. पूर्णिमा की चाँदनी रात का मनोहारी चित्रण है।
४. पद-मैत्री है।

पाठ्य पुस्तक के विषयवस्तु, सन्देश, जीवन मूल्यों पर आधारित प्रश्न-
१. कवि ने ब्रज दूलह किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार रूपी मन्दिर का दीपक क्यों कहा है?
उत्तर- देव ने श्रीकृष्ण को श्रीब्रजदूलह कहा है क्यों कि श्रीकृष्ण की ईश्वरीय आभा से यह संसार रूपी मन्दिर प्रकाशित है।
२. कवि ने वसंत रूपी बालक का पलना, बिछौना और वस्त्र किसे बताया है?
उत्तर- कवि ने वसंत रूपी बालक का पलना वृक्ष की डालों को, बिछौना मुलायम नए पत्तों को तथा फूलों के झबले को वस्त्र बताया है।

अभ्यास प्रश्नः—
१. चाँदनी रात की सुन्दरता को कवि ने किन-किन रूपो में देखा है?

४. जयशंकर प्रसाद

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

निम्नलिखित पद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

मधुप गुन-गुना कर............. देंखोगे-यह गागर रीती।

प्रश्न-

१. कवि तथा कविता का नाम लिखिए?

उत्तर- कवि का नाम - जयशंकर प्रसाद

कविता का नाम - आत्मकथा

२. पत्तियों के मुरझाकर गिरने का लक्ष्यार्थ क्या है?

उत्तर- पत्तियों के मुरझाकर गिरने का लक्ष्यार्थ है - जीवन में आने वाले दुःख और निराशा।

३. कवि अपनी दुर्बलता को क्यों नहीं कहना चाहता है?

उत्तर- कवि अपने प्रिय को अपनी दुर्बलता नहीं कहना चाहता। वह जानता है कि सच्चा कवि अपने अनुभवों का सही सही वर्णन करता है। यदि जीवन में झाँककर देखा जाय तो हमें कमजोरियाँ अधिक दिखाई देती हैं। इसलिए कवि जानबूझ कर अपनी कमजोरियों को नहीं बताना चाहता है।

४. गागर रीती से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- गागर रीती का अभिप्राय है - खाली घड़ा अर्थात् असफल जीवन। कवि को अपने जीवन में कोई विशेष उपलब्धि प्राप्त नहीं हुई, उनके जीवन में असफलता और कमजोरियाँ आर्थिक हैं।

५. भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि के जीवन की असफलताओं और दुःखों का वर्णन विस्तार से हुआ है। आत्मकथाओं में लेखक की विफलताएँ और कमजोरियाँ अधिक होती हैं। इसका मुख्य आशय यह है कि संसार में व्यक्ति की वेदना का कोई अंत नहीं है।

काव्यांश पर आधारित सराहना - संबंधी प्रश्नोत्तर

१. मुरझाकर गिर रहीं पात्तियों में कौन-सा भाव व्यक्त हो रहा है?

उत्तर- वेदना का

२. यह गागर रीति में निहित लक्षणार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह गागर रीति का प्रयोग कवि अपने हृदय के लिए कर रहा है। अर्थात् कवि के हृदय में अब कोई रस बाकी नहीं है।

३. मेरा रस ले में 'रस' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- यहाँ रस से कवि का अभिप्राय वेदना है। कवि अब वेदना को ही जीवन का संबल मानता है।

४. 'मधुप गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी' यह 'अपनी' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

उत्तर- रूपक और अनुप्रास अलंकार

५. 'तब भी कहते हो- कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती' में कवि किसे संबोधित कर रहा है?

उत्तर- इस पंक्ति में कवि अपनी प्रिय को संबोधित कर रहा है। वह पूछना चाहता है कि जब असंख्य जीवन अपना उपहास स्वयं उड़ा रहे हैं, तो वह उसकी भूली-बिसरी कमजोरियों की कहानी क्यों सुनना चाहती है।

संदेश-जीवन मूल्यों-विषयवस्तु संबंधी प्रश्न

१. 'उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की'- से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- इससे हमें यह प्रेरणा मिलती है कि प्रिय की स्मृति को भुला पाना अत्यंत कठिन है। हमें जीवन की गाथा में प्रिय की स्मृति को जीवन का संबल बनाकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। प्रेम को अपने जीवन की दुर्बलता नहीं मानना चाहिए।

अभ्यास प्रश्नः–

१. 'मधुप गुन-गुना कर ------ आज घनी' कथन के द्वारा क्या संदेश मिलता है?

२. 'यह लो, करते ही रहते हैं, अपना व्यंग्य-मलिन उपहास' पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

५. उत्साह- अट नहीं रही है

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

बादल गरजो घेर घेर ------ शीतल कर दो : बादल गरजो

प्रश्नः

(क) कवि ने कविता में बादल को ही क्यों संबोधित किया है?

उत्तर- कवि बादल को क्रांति का प्रतीक मानता है और यह जन आकांक्षाओं की पूर्ति का माध्यम है। इसलिए कवि बादल को संबोधित करता है।

(ख) कवि बादल के बरसने की प्रार्थना क्यों करता है?

उत्तर- कवि बादल से बरसने की प्रार्थना इसलिए करता है ताकि प्यासी और तपती धरती की प्यास बुझे अर्थात् धरती पर कष्ट झेल रहे आम आदमी की पीड़ा का निवारण हो सके।

(ग) कवि बादल से गरजने के लिए क्यों कहता है?

उत्तर- बादल का गरजना क्रांति आने की सूचना है और कवि इसके माध्यम से व्यवस्था परिवर्तन चाहता है जिससे लोगों के दुखों को दूर किया जा सके। वस्तुतः गरजना संघनन की प्रक्रिया से ही संभव है और क्रांति के लिए लोगों का एकजुट होना अवश्यंभावी शर्त है। यह ही क्रांति का हेतु है और बादल का बरसना अर्थात् लोगों के दुखों का, सामाजिक वैषमता का अंत क्रांति का प्रतिफलन है।

(घ) कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

उत्तर- इस कविता का शीर्षक उत्साह इसलिए रखा गया है क्योंकि कवि के मन में बादल को लेकर उत्साह है और उत्साह, क्रांति की पहली शर्त है। यह उत्साह है व्यवस्था परिवर्तन की परवर्ती स्थिति की कल्पना का।

(ङ) कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- कविता में बादल को पीड़ित-प्यासों की प्यास बुझाने वाला, लोगों की इच्छाओं की पूर्ति करने वाला, नई कल्पना की उड़ान भरने वाला और नूतन कविता के अर्थों की ओरसंकेत करने वाला बताया है।

(च) कविता का शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- खड़ी बोली का प्रयोग। तत्सम शब्दावली। प्रकृति का मानवीकरण। नाद-सौंदर्य और ध्वन्यर्थ व्यंजना। बादल का क्रांति के रूप में उपमात्मकता। मुक्त छन्द का प्रवाह। 'बाल कल्पना के से पाले में' उपमा अलंकार का प्रयोग है। 'ललित-ललित' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है। दृश्य बिम्ब है।

अट नही रही है

अट नहीं रही ---------- पाट-पाट शोभा-श्री पट नहीं रही है।

प्रश्नः

(क) 'अट नहीं रही है' का क्या आशय है?

उत्तर- 'अट नहीं रही है' का आशय यह है कि फागुन की शोभा इतनी अधिक है कि वह प्रकृति और तन-मन में समा नहीं पा रही है।

(ख) फागुन की शोभा कैसी है? और इसका कवि पर क्या प्रभाव पड़ता है

उत्तर- फागुन की शोभा सर्वव्यापक है। इसने सारे वातावतरण को पुष्पित व सुगंधित कर दिया है। मन में उल्लास भर जाता है और सर्वत्र फागुन का सौन्दर्य ही झलकता है। कवि पर फागुन की इस शोभा का इतना अधिक प्रभाव पड़ता है कि वह चाहकर भी अपनी आँख नहीं हटा पाता है।

(ग) फागुन की मादकता का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- फागुन की मादकता में व्यक्ति पर प्रकृति का जादू चल जाता है और वह कल्पना के पंख लगाकर आकाश में उड़ना चाहता है।

(घ) इस कविता पर किस वाद का प्रभाव लक्षित होता है?

उत्तर- इस कविता पर छायावाद का प्रभाव लक्षित होता है। छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है और प्रकृति की चित्रात्मकता व मानवीकरण इसका माध्यम है।

प्रश्न - 'कहीं पड़ी है उर में' ----------- पट नहीं रही है। - शिल्प सौन्दर्य लिखिए।

उत्तर- (क) पाट-पाट और शोभा-श्री में अनुप्रास एवं पुनरुक्ति अलंकार का प्रयोग है।

(ख) अतिशयोक्ति अलंकार भी है।

(ग) तत्समनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग देखते ही बनता है।

(घ) प्रकृति की चित्रात्मकता दृष्टिगोचर है।

(ङ) दृश्य व घ्राण बिम्ब है।

अभ्यास–प्रश्नः–

क. कवि की ऑख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

ख. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता को किस प्रकार चित्रित किया है?

पाठ-६

१. एक दंतुरित मुस्कान

२. फसल

नागार्जुन

एक दंतुरित मुसकान

तुम्हारी यह दंतुरित ------ रहोगे अनिमेष!

प्रश्नः

(क) कवि ने किसकी मुस्कान को प्रभावी बताया है? यह कैसी मुस्कान है?

उत्तर- कवि ने नन्हें शिशु की मुस्कान को प्रभावी बताया है। दूधिया दाँतों से झलकती मुस्कान किसी को भी प्रसन्नचित्त कर देने में समर्थ है।

(ख) कवि शिशु को देखकर क्या कल्पना करता है?

उत्तर- कवि शिशु को देखकर कल्पना करता है कि कमल का फूल तालाब को छोड़कर मेरी झोपड़ी में खिल गया है और पत्थर पिघल कर जल बन गया होगा।

(ग) शिशु पिता को अनिमेष क्यों देखता है?
उत्तर- शिशु पिता को पहली बार देख रहा है और उसे अतिथि समझ रहा है। उसे पहचान नहीं पा रहा है। अतः वह अनजान व्यक्ति को एकटक निहारता रह जाता है।

थक गए हो --------- क्या रहा संपर्क।
प्रश्न-
(क) कवि आँख फेर लेने को क्यों कहता है?
उत्तर- शिशु लगातार टकटकी बाँधे कवि (पिता) को देख रहा था और उसे पहचानने की कोशिश कर रहा था। अतः कवि आँख फेर लेने के लिए कहता है ताकि शिशु थक न जाये।
(ख) कवि किसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है और क्यों?
उत्तर- कवि अपनी पत्नी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है क्यों कि उसने अकेले ही बच्चे का लालन-पालन किया है और इस दंतुरित मुस्कान को देख सकने का अवसर उन्हें पत्नी के कारण ही मिला है।
(ग) कवि स्वयं को प्रवासी क्यों कहता है?
उत्तर- कवि स्वयं को प्रवासी कहता है क्यों कि वह लंबे समय तक घर से बाहर रहा था। बच्चे के लिए वह अतिथि के समान है।

उँगलियाँ माँ ------------ बड़ी ही छविमान।
प्रश्न-
(क) मधुपर्क क्यों पिलाया जाता है?
उत्तर- मधुपर्क शिशु को पिलाया जाता है, क्योंकि इसमें मधु के साथ दूध, दही, घी तथा गंगाजल को मिलाया जाता है और यह पेय बच्चे के स्वास्थ्य के लिए पुष्टिकर होताहै।
(ख) शिशु कवि की ओर कैसे देखता है?
उत्तर- शिशु कवि की ओर कनखियों से देखता है।
(ग) शिल्प-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- (क) खड़ीबोली की रचना मुक्त छंद में रचित है।
(ख) अन्त्यानुप्रास दृष्टव्य है।
(ग) कनखी मार देखना, आँखें चार होना मुहावरों का सटीक प्रयोग हुआ है।
(घ) 'मधुपर्क' शब्द में माँ का माधुर्य एवं वात्सल्य झलकता है।

<u>फसल</u>

एक के नहीं ------ मिट्‌टी का गुण धर्म।
प्रश्न-
(क) कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं
उत्तर- कविता में वर्णित आवश्यक तत्त्व : नदियों का पानी, मानव-श्रम, मिट्‌टी, सूरज की किरणें और हवा।
(ख) फसल को हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है
उत्तर- कवि कहना चाहता है कि फसल के उगाने में मानव के हाथों का श्रम लगा होता है। फसल को मानव का स्पर्श मिलता है और वह लहलहाने लगती है। इस प्रकार कवि ने मानव श्रम को प्रतिष्ठित किया है।
(ग) कवि के अनुसार फसल क्या है

उत्तर- कवि के अनुसार फसल
- नदियों के पानी का जादू है।
- मानव-श्रम का परिणाम है।
- सूरज की किरणों का रूपांतर है।
- हवा की थिरकन का सिमटा संकोच है।
(घ) शिल्प सौदंर्य लिखिए।
उत्तर- (क) खड़ीबोली व मुक्तछंद।
(ख) एक के नहीं, दो के नहीं, शब्दों का बार-बार प्रयोग समन्वित प्रयास का द्योटक है।
(ग) प्रकृति के पंच तत्व- धरती, जल, अग्नि, आकाश, हवा व मनुष्य का समन्वय दिखाया गया है।
(घ) दृश्य बिम्ब व माधुर्य गुण का प्रयोग।
अभ्यास–प्रश्नः–
क. बच्चे की मुस्कान और एक बड़े व्यक्ति की मुस्कान में क्या अंतर है?
ख. कवि ने फसल को हजार–हजार मिट्टी का गुणधर्म क्यों कहा है?

पाठ-७
गिरिजा कुमार माथुर
छाया मत छूना

निम्न पद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए
छाया मत छूना..................मन, होगा दुःख दूना।
प्रश्नः
(क) कवि और कविता का नाम लिखो।
उत्तर- कवि का नाम- गिरिजा कुमार माथुर
कविता का नाम- छाया मत छना।
(ख) कवि क्यों कहता है छाया मत छूना?
उत्तर- कवि इसलिए ऐसा कहता है क्यों कि पुरानी स्मृतियों को कुरेदने से दुख के अतिरिक्त अन्य कुछ नही मिल सकता।
(ग) 'छवियों की चित्रगंध फैली मनभावनी' का आशय स्पष्ट करो।
उत्तर- इस शब्दबंध का आशय है कि पुरानी मधुर स्मृतियाँ जब हमारे मानस पटल पर आ जाती है तो वे अपनी मधुरता एवं सरसता के कारण अत्यन्त रूपवान लगती है।
(घ) भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- अतीत की स्मृतियाँ को सुंगध युक्त एवं सुहावनी बताया गया है। वे हमें भरमाती हैं। ये स्मृतियाँ हमें कल्पना लोक में विचरण कराती है। यथार्थ का सामना करनें से, ये यादें, हमें विमुख करती हैं।
उपर्युक्त पद्यांश पर आधारित काव्यशिल्प सराहना सम्बन्धी प्रश्न-
(क) काव्यांश की भाषा कैसी है?
उत्तर- तत्सम प्रधान खड़ी बोली।
(ख) काव्यांश किस छन्द में लिखा गया है?
उत्तर- मुक्त छन्द में।

(ग) सुरंग सुधियाँ सुहावनी में कौन सा अलंकार है?
उत्तर- अनुप्रास अलंकार
(घ) काव्यांश में कौन-सा रस है?
उत्तर- वियोग श्रृंगार
(ङ) काव्यांश की भाषा की विशेषताएँ लिखो।
उत्तर- खड़ी बोली, मुक्त छंद परक, तत्सम, प्रवाहमयी एवं संगीतात्मकता।

विषयवस्तु संदेश जीवन मूल्यों सम्बन्धी प्रश्न-
(क) छाया शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूनें से क्यों मना किया है?
उत्तर- 'छाया' को कवि नें पुरानी यादों के रूपक के रूप में प्रयुक्त किया है। कवि नें पुरानी यादों को छूनें से इस लिए मना किया है क्यों कि वे यथार्थ परक नहीं है और उनसे दुख के अलावा कुछ भी मिलने वाला नहीं है। वे हमें पलायनवाद की तरफ ले जाती हैं।
(ख) कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों की है?
उत्तर- यथार्थ का सामना करना ही मनुष्यता है। यथार्थ से भाग कर पुरानी यादों से चिपके रहना नकारात्मक है। सुधार एवं सुख की संभावनाएँ कभी समाप्त नही होती। आवश्यकता है यथार्थ का डटकर सामना करनें की। अतः हमें यथार्थ का सामना करना चाहिए।
अभ्यास प्रश्नः—
क. मृगतृष्णा किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?
ख. कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

पाठ-९
कन्यादान

निम्नलिखित काव्यांशो को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-
(क) कितना प्रामाणिक था.................... कुछ लयबद्ध पंक्तियों की.
१. यहाँ किसके दुख का प्रसंग उठाया गया है और क्यों?
उत्तर- काव्यांश में माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति है। उसकी कन्या का विवाह हुआ है। बेटी शरीरिक और मानसिक रूप से अपरिपक्व थी। माँ अपने जीवन के संचित अनुभवों के आधार पर उसे आगामी जीवन के लिए कुछ वास्तविकाथ्य समझाती है। माँ बेटी की सबसे निकट और सुख-दुख की साथी होती है। विवाह के उपरांत जब लड़की ससुराल जाने लगती है तो माँ को ऐसा लगता है कि जैसे उसकी अंतिम पूँजी ही उसके पास से जा रही है।
२. लड़की अभी सयानी नहीं थी से क्या स्थिति प्रकट होती है?
उत्तर- लड़की अभी सयानी नहीं थी से यह प्रकट होता है कि लड़की अभी भोली और सरल हृदय की थी। विवाह के लिए उसकी समझ विकसित नहीं हुई थी। वह अल्पायु की थी।
३. किसे दुख बाँचना नही आता था और क्यों?
उत्तर- वह लड़की जिसका विवाह ही रहा था उसे दुख बाँचना नहीं आता था। क्यों कि उनकी आयु अभी छोटी थी। उसे जीवन के व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान नहीं हुआ था। उसने अभी तक सुख के दिन ही देखे थे जिनका उस लड़की को अनुभव था किन्तु दुख से अभी परिचित नहीं थी।
(ख) माँ ने कहा पानी.................. बंधन है स्त्री जीवन के।

१. माँ अपनी बेटी को अपने चेहरे पर रीझने के लिए क्यों मना करती है? इस कथन में दर्पण के बदले पानी शब्द का प्रयोग क्या किया गया है?

उत्तर- माँ अपनी बेटी को अपने चेहरे रीझने के लिए इसलिए मना कर रही है क्यों कि सुंदरता पर रीझने से मन में अहंकार आ जाता है। फलस्वरूप बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। रूप सौन्दर्य नश्वर है, सुन्दरता के ढलते ही मनुष्य उपहास का पात्र बन जाता है। दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि अपनी सुंदरता पर उसे घमंड आ जाए और वह एक आदर्श स्त्री का कर्तव्य भूल जाए। इस कथन में दर्पण के बदले पानी का प्रयोग इसलिए हुआ है पानी तरल वस्तु है और दर्पण ठोस। पानी में दिखाई देता चेहरा भ्रम उत्पन्न कर सकता है।

२. वस्त्र और आभूषणों को शब्दिक भ्रम और बंधन क्यों कहा गया है?

उत्तर- स्त्री के लिए वस्त्र और आभूषण शब्दिक भ्रम और बंधन है। उसे यह गहने वंश की परम्परा के रूप में पहनाए जाते हैं। वह अपने आप को इन परंपराओं से मुक्त नहीं रख सकती है। इसी भार के नीचे दब कर उसका अस्तित्व मिट जाता है।

३. प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कैसी है?

उत्तर- इस काव्यांश की भाषा सहज, सरल खड़ीबोली है जिसमें तत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

४. यह किस युग की कविता है?

उत्तर- यह कविता नई कविता के युग की है।

५. भ्रम के लिए कौन-सा विशेषण प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर- भ्रम के लिए 'शाब्दिक' विशेषण का प्रयोग हुआ है।

पाठ के आधार पर प्रश्न अभ्यास-

१. आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना?

उत्तर- लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना पंक्ति के माध्यम से माँ कन्यादान के अवसर पर अपनी पुत्री को सीख दे रही है। लड़की का स्वभाव कोमल होता है। लज्जा आदि उसके स्वाभाविक गुण होते है, किन्तु वर्तमान में लोग इन्ही गुणों को लड़की की कमजोरी जानकर उसका लाभ उठाते हैं। उसका शोषण करते हैं। इसीलिए माँ कहती है कि तुम अपने स्वाभाविक गुण नहीं छोड़ना। किन्तु किसी भी परिस्थिति में कमजोर मत पड़ना। लड़की होकर भी दृढ़ता का परिचय देना। अपनी शक्ति को कम नहीं समझना।

२. आग रोटिया सेंकने के लिए है
जलने के लिए नही।

(क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की और संकेत किया गया है?

(ख) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा?

उत्तर- (क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की शोषित और दयनीय स्थिति का चित्रण हैं। ये पंक्तियों दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों की ओर संकेत करती हैं कि किस प्रकार दहेज न लाने पर एक मासूम लड़की को ऐसे जलाकर मार दिया जाता है जैसे स्त्री का अपना कोई अस्तित्व, कोई अधिकार नहीं हैं। जिस आग पर वह रोटिया सेंकती है, सभी का पेट भरती है, उसी आग को उसकी मृत्यु का साधन बना दिया जाता है।

(ख) माँ ने इस स्थिति के प्रति बेटी को सचेत करना जरूरी समझा, क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि उसकी बेटी के साथ किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना घटे। बेटी शारीरिक और मानसिक रूप से

अपरिपक्व थी। उसे ऐसी स्थितियों के विषय में ज्ञान नहीं था। इसीलिए माँ ने उसे सचेत करना उचित समझा,
जिससे भविष्य में कोई प्रिय स्थिति आने पर वह दृढ़तापूर्वक उसका सामना कर सके ।

३. माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी क्यों लग रही थी?
उत्तर- माँ को अपनी बेटी इसलिए अंतिम पूँजी लग रही थी क्यों कि माँ बेटी के सबसे निकट और उसके सुख-दुख की साथी होती है। बेटी के सामने माँ अपने जीवन की उलझनों, समस्याओं और सुख-दुख को खुलकर अभिव्यक्त करती है। विवाह के उपरांत जब लड़की ससुराल जाने लगती है तो माँ को ऐसा अनुभव होता है जैसे उसकी अंतिम पूँजी ही उसके पास से जा रही है।
४. माँ ने बेटी को क्या क्या सीख दी?
उत्तर- माँ द्वारा बेटी को जी सीख दी गई है उसमें भारतीय स्त्री के पारंपरिक छवि के साथ उसमें आधुनिक विचारों की झलक मिलती है। इस संदर्भ के आधार पर माँ ने बेटी को निर्म्नलिखित सीख दीं-
(क) अपने रूप सौन्दर्य पर कभी मत मोहित होना तथा इस रूप सौन्दर्य पर गर्व नहीं करना।
(ख) जीवन मे वह अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करें। कभी जीवन में अपने आपको स्त्री के मोह में न पड़े।
(ग) कोमलता आदि गुणों को अपनी कमजोरी न बनने दे।

अभ्यास प्रश्नः—
१. कविता में प्रयुक्त भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।
२. कोमलता के गौरव में कमजोरी का उपहास कैसे छिपा रहता है?
३. कन्यादान कविता में विवाह के समय कन्या की आयु क्या रही होगी?
४. भ्रम और बंधन किसे कहा गया है?
५. आपकी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना कहाँ तक उचित है?

पाठ-१०
मंगलेश डबराल

प्रश्न- निम्न काव्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए
तारसप्तक में जब.................. के लिए वह अकेला नही है।
(क) कवि और कविता का नाम लिखिए।
उत्तर- कवि- मंगलेश डबराल
कविता- संगतकार
(ख) संगतकार से क्या अभिप्राय है?
उत्तर- संगतकार का अभिप्राय ऐसे व्यक्तियों से है जो मुख्य नायक की सहायता करते है जिससे वह सफल होता है।
(ग) संगतकार मुख्य गायक की सहायता कैसे करता है?

उत्तर- जब कभी मुख्य गायक अपने सुर से भटकने लगता है या उत्साह खोने लगता है तब संगतकार उसे सम्हालता है और सफलता के रास्ते पर लाता है।
(घ) आवाज से राख जैसा कछ गिरता हुआ का क्या अभिप्राय है?
उत्तर- इससे अभिप्राय है- मुख्य गायक का गिरता हुआ सुर।
सराहना सम्बन्धी प्रश्न (उपर्युक्त पद्यांश पर आधारित)
(क) काव्यांश की भाषा कैसी है?
उत्तर- तत्सम, खड़ी बोली
(ख) काव्यांश किस छन्द में लिखा गया है?
उत्तर- मुक्त छन्द में
(ग) यह किस प्रवृत्ति की कविता है?
उत्तर- नई कविता
(घ) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार किस पंक्ति में है?
उत्तर- कभी-कभी वह यों ही देता है उसका साथ।
(ङ) पद्य में किस रस का प्रयोग है?
उत्तर- शांत रस का।

विषयवस्तु-संदेश-जीवन मूल्यों सम्बन्धी प्रश्न-
(क) किसी भी क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वाले लोगों को अनेक लोग तरह-तरह से अपना योगदान देते हैं। कोई एक उदाहरण देकर इस कथन पर विचार लिखो।
उत्तर- यह विल्कुल सत्य है। सफलता अधिकांशतः सामूहिक प्रयास का ही प्रतिफलन होती है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति भारतीय प्रशासनिक सेवा में सफल होता है उसमे उसके व्यक्तिगत प्रयास के अलावा उसके माता-पिता, भाई, मित्रों और सबसे अधिक गुरुजनों या पथप्रदर्शक की भूमिका होती है।
(ख) कवि संगतकार द्वारा अपने स्वर को ऊँचा न उठाने को उसकी विफलता न मान कर मानवीयता क्यों मानता है?
उत्तर- संगतकार को संगीत की सूक्ष्म समझ होती है। वह भी अपनें स्वर को तारसप्तक तक ऊँचा उठा सकता है। परन्तु वह अपना स्वर मुख्य गायक से नीचा ही रखता है। उसे अपनी भूमिका पता है और वह उसमें ही अनुशासित रहता है। वह मुख्य गायक की सफलता के लिए ही प्रयास करता है। यह उसकी मानवीयता है।

१०-नेताजी का चश्मा

स्वयं प्रकाश

निम्नलिखित गद्यांशो को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-
१. हालदार साहब को यह सब.................. आजाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही?
(क) पाठ तथा उसके लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर- पाठ - नेताजी का चश्मा
लेखक- स्वयं प्रकाश
(ख) हालदार साहब को कौन-सी बात विचित्र और कौतुकभरी लग रही थी?

उत्तर- हालदार साहब को नेताजी की संगमरमर की मूर्ति के बारे में सारी बातें विचित्र और कौतुकभरी लग रही थी। मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल द्वारा मूर्ति में चश्मा न लगा पाना जितना रोचक था, उससे भी बढ़कर रोचक था कैप्टन द्वारा उस पर बदल-बदल कर चश्मे लगाना।

(ग) हालदार साहब ने पानवाले से क्या पूछा और क्यों?

उत्तर- हालदार साहब ने पानवाले से पूछा कि यह चश्मेवाला क्या कभी फौजी रहा है या सुभाषचंद्र बोस का साथी रहा है। उसने यह सवाल इसलिए पूछा क्यों कि उसे इस विचित्र आदमी के बारे में जानने की उत्सुकता थी।

२. बार-बार सोचते, क्या होगा................ पान आगे कहीं खा लेंगे।

(क) हालदार साहब किस बात पर दुखी हो गए?

उत्तर- हालदार साहब दुनिया के स्वार्थी स्वभाव पर दुखी हो गाए। उन्होंने देखा कि लोग अपने देश के लिए बलिदान होने वाले त्यागी लोगों पर भी हँसते है। वे उन्हें उचित आदर नहीं देते। जबकि वे अपने स्वार्थ के लिए बिकने को भी तैयार हो जाते हैं। अर्थात् कोई भी समझोता करने को तैयार हो जाते है।

(ख) इस बार हालदार साहब ने कस्बे में न रुकने फैसला क्यों किया?

उत्तर- हालदार साहब सुभाष चन्द्र बोस की बिना चश्मे के नहीं देख सकते थे। उनका देशभक्त मन कहता था कि इस कस्बे में कोई तो सुभाष का सम्मान करने वाला हो, उन्हे चश्मा पहनाने वाला हो। परंतु, अब चश्मेवाला कैप्टन मर चुका था। इसलिए उन्हें लगता था कि सुभाष की मूर्ति बिना चश्मे की होगी।

(ग) हालदार साहब ने अपने ड्राइवर को क्या आदेश दिया और क्यों?

उत्तर- हालदार साहब ने अपने ड्राइवर को आदेश दिया कि कस्बे के चौराहे पर जीप न रोके। वे बिना चश्मे वाला सुभाष की मूर्ति को देखना नहीं चाहते थे।

अभ्यास–प्रश्नः–

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

(ख) पानवाले का रेखा चित्र प्रस्तुत कीजिए।

(ग) नेताजी की मूर्ति पर चश्मा का न होना किस प्रवृत्ति का परिचायक है? मूर्ति पर रखा सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

<u>११. बालगोबिन-भगत</u>

<u>रामवृक्ष बेनीपुरी</u>

गद्यांश पर अर्थ ग्रहण सम्बन्धी प्रश्न-

१. खेतीबारी करते, परिवार................ लोगों को कौतूहल होता।

(क) पाठ का नाम तथा लखेक का नाम बताइए।

उत्तर- पाठ- बालगोबिन भगत

लेखक- रामवृक्ष बेनीपुरी

(ख) किन-किन बातों से पता चलता है कि बालगोबिन भगत कबीर को साहब मानते थे?

उत्तर- बालगोबिन भगत कबीर के गीतों को गाते, उन्हीं के आदेशों पर चलते, किसी से भी दो टूक बातें करने में संकोच न करते और कबीर को ही साहब मानते थे।

(ग) गृहस्थ होते हुए भी भगत को साधु क्यों कहा जाता है?

उत्तर- गृहस्थ होते हुए भी बालगोबिन को साधु उनके चरित्र और व्यवहार के कारण कहा जाता था। वह कबीर की शिक्षाओं का पालन करते, झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार करते, किसी से झगड़ा नहीं करते। साधु के समान आचरण के कारण वह गृहस्थ होते हुए भी साधु थे।

२. बालगोबिन भगत की संगीत............... ज्यादा हकदार होते हैं।

(क) बालगोबिन भगत अपने बेटे को अधिक क्यों मानते थे?

उत्तर- बालगोबिन भगत का बेटा कुछ सुस्त और बोदा-सा था। उनकी नजर में ऐसे आदमी ज्यादा निगरानी और मुहब्बत के हकदार होते हैं। इसलिए वह अपने बेटे को कुछ अधिक ही मानते थे।

(ख) जिस दिन बागगोबिन का बेटा मरा, लेखक की दृष्टि में उस दिन उनकी संगीत साधना का चरम उत्कर्ष क्यों था?

उत्तर- कबीर का संगीत वैसे भी उनके जीवन का अभिन्न अंग था और उस दिन तो वह संगीत बेटे की मृत्यु से उत्पन्न दुख से पार पाने का सहारा था।

(ग) बालगोबिन भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ कैसे व्यक्त की?

उत्तर- बेटे की मृत्यु पर बालगोबिन भगत बेटे के शव के पास बैठे अपनी तल्लीनता में कबीर के पद गाए जा रहे हैं। कबीर के गीतों उनकी वाणी में उनका विश्वास उस दिन और अधिक स्पष्ट रूप में दिखता है।

विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न-

(क) बालगोबिन भगत मृत्यु को किसका अवसर मानते थे और क्यों?

उत्तर- बालगोबिन भगत मृत्यु को आनन्द और उत्सव का अवसर मानते थे। कबीर की शिक्षाओं से वह प्रभावित थे जिनमें मृत्यु वास्तव में आत्मा का परमात्मा से मिलन है या विरहिणी का अपने प्रेमी से मिलन।

(ख) भगत के व्यक्तित्व और वेशभूषा का चित्र अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- बालगोबिन भगत साठ के ऊपर के रहे होंगे। कपड़े बिल्कुल कम पहनते। कमर में एक लंगोटी-मात्र और सिर में कबीर पंथियों की सी कनफटी टोपी। मस्तक पर चमकता रामानंदी चंदन, गले में तुलसी की जड़ों की एक बेडौल माला बाँधे रहते।

अभ्यास–प्रश्नः–

क. भगत की पुत्रवधू उन्हे अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

ख. पाठ के आधार पर बताएं कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन–किन रूपों में प्रकट हुई है?

१२. लखनवी अंदाज

यशपाल

गद्यांश से अर्थ ग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

१.नवाब साहब ने सतृष्ण..................... खिड़की से बाहर छोड़ दिया।

(क) खीरे की फाँक को उठाकर नवाब साहब ने क्या किया?

उत्तर- खीरे की फाँक को नवाब साहब ने उठाया और उसे होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा, आँखे मूँदकर उसका स्वाद लिया फिर उसे डिब्बे से बाहर फेंक दिया।

(ख) नवाब साहब खीरे की फाँकों को देखकर क्या सिद्ध करना चाहते थे?

उत्तर- खीरे की फाँकों को खिड़की से बाहर फेंक कर नवाब साहब यह दिखाना चाहते थे खीरे जैसी तुच्छ चीज खाना उनकी नवाबी शान के खिलाफ था और साथ ही इस प्रकार के काम उनके रईसी शौक में आते हैं।

विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न-

(क) लेखक को नवाब साहब के किन आव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर- लेखक जैसे ही डिब्बे में आया पहले से उपस्थित सज्जन ने जिस दृष्टि से उन्हें देखा ऐसा लगा जैसे किसी ने उनके एकांत में विघ्न डाल दिया। उन्होंने लेखक की संगति में कोई उत्साह नहीं दिखाया। उन्होने लेखक को बड़ी अनिच्छा भाव से अभिवादन करते हुए खीरा खाने को कहा। इन बातों से स्पष्ट है कि वह लेखक से बातचीत के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं थे।

(ख) लेखक ने नवाब साहब के चेहरे पर असन्तोष के भावों को देखकर क्या अनुमान लगाया?

उत्तर- लेखक ने उनके अन्तोष के भावों को देखकर अनुमान लगाया कि या तो वह किसी समस्या की उधेड़बुन में हैं, कहानी की सूझ में अथवा खीरे जैसी तुच्छ वस्तु का शौक करते देखे जाने पर संकुचित हो उठे हैं।

अभ्यास–प्रश्नः–

क. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है,यशपाल जी के इस विचार से आप कहॉ तक सहमत हैं?

ख. किन–किन चीजों का रसास्वादन करने के लिए आप किस प्रकार की तैयारी करते हैं?

१३. मानवीय करुणा की दिव्य चमक

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

१. फादर बुल्के संकल्प से................इसके लिए अकाट्य तर्क देते।

(क) पाठ तथा उसके लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ- मानवीय करुणा व दिव्य चमक

लेखक- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(ख) फादर को सबसे बड़ी चिंता क्या थी? इस चिंता के उपाय के लिए उन्होंने क्या किया?

उत्तर- फादर को सबसे बड़ी चिंता हिन्दी की स्थिति को लेकर थी। वे हिन्दी वालो द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षा से दुखी होते थे। वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। इसके लिए उन्होने हर मंच से, हर अवसर पर हिन्दी का दर्द व्यक्त किया और उसे राष्ट्र भाषा बनाने के लिए अनेक तर्क दिए।

(ग) संकल्प के सन्यासी होने का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- संकल्प के सन्यासी होने का तात्पर्य है, सन्यासियों के समान अपने जीवन को मानव मात्र के कल्याण में लगा देने का संकल्प कर लेने वाला। यह फादर बुल्के के लिए प्रयोग किया गया है। उन्होंने मानव सेवा का दृढ़ संकल्प लिया था।

२. इस तरह हमारे बीच से...........................याद में श्रद्धावनत हूँ।

(क) इस तरह हमारे बीच से वह चला गया- इस पंक्ति में वह किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और उन्हें सर्वाधिक छायादार, फल-फूल और गंध से भरा वृक्ष क्यों कहा गया है?

उत्तर- यह फादर बुल्के के लिए प्रयुक्त हुआ है। फादर सर्वाधिक छायादार, फल-फूल और गंध से भरा वृक्ष इसलिए कहा गया है, क्योंकि उनका साथ दुखों की धूप में शीतल छाया के समान था। वे एक वृक्ष के समान सभी को अपने आशीर्वाद रूपी फल-फूल और वात्सल्य रूपी गंध प्रदान कर सुखी करते थे।

(ख) लेखक फादर की याद में श्रद्धानत क्यों है?
उत्तर- लेखक फादर के प्रेम और अपनत्व से भरे व्यक्तित्व के कारण उनकी याद में श्रद्धानत है। फादर ने जीवन भर दूसरों का साथ दिया और उनके जीवन में प्रेम और सुख भर दिया।
(ग) फादर की स्मृति को यज्ञ की पवित्र आग की आँच क्यों कहा गया है?
उत्तर- फादर की स्मृति को यज्ञ की पवित्र आग का आँच इसलिए कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार यज्ञ की आँच मन में पवित्रता की तपिश ला देती है, उसी प्रकार फादर की स्मृति भी मन को पवित्र अनुभूति और प्रेम की तपिश से भर देती है।

अभ्यास प्रश्न
(क) फादर बुल्के की उपस्थिति लेखक को देवदारू की छाया जैसी क्यों लगती थी?
(ख) लेखक ने मानवीय करुणा की दिव्य चमक किसे कहा है और क्यों?

१४. एक कहानी यह भी
मन्नू भंडारी

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न-
(क) सो दसवीं कक्षा ----- समझ सकती थी, समझा।
१. पाठ एवं लेखिका का नाम बताइए।
उत्तर- पाठ का नाम- एक कहानी यह थी
लेखिका- मन्नू भंडारी
२. दसवीं कक्षा तक लेखिका की क्या स्थिति थी?
उत्तर- दसवीं कक्षा तक लेखिका को किसी विषय की खास समझ न थी। वह घर में होनेवाली बहसों को केवल सुनती पढ़ती थी।
३. फर्स्ट ईयर में आने के बाद लेखिका का परिचय अपनी हिन्दी की प्राध्यापिका से किस रूप में हुआ?
उत्तर- लेखिका परिचय शिल्प अग्रवाल से हुआ। उन्होने लेखिका का परिचय साहित्य की दुनिया से करवाया। स्वयं चुन कर किताबें पढ़ने को दी और फिर उन पर बहसें की।
४. लेखिका ने कौन-कौन सी रचनाएँ पढ़ी और समझा?
उत्तर- सुनीता (उपन्यास), शेखर एक जीवनी (उपन्यास), नदी के द्वीप (कविता), त्यागपत्र, चित्रलेखा।
५. जैनेन्द्र और अज्ञेय को पढ़ने के बाद लेखिका को कैसा महसूस हुआ?
उत्तर- जैनेन्द्र और अज्ञेय को पढ़ने के बाद लेखिका को महसूस हुआ कि साहित्य में वह युग मूल्यों के मंथन का युग था। पाप-पुण्य, नैतिक-अनैतिक, सही-गलत की बनी-बनाई धारणाओं पर प्रश्न चिह्न ही नहीं लग रहा था बल्कि उन्हें ध्वस्त भी किया जा रहा था।
(ख) सुशीला से --------- प्रतिच्छाया के रुप में।
१. पाठ तथा लेखक का नाम बताइए।
उत्तर- पाठ का नाम- एक कहानी यह भी
लेखिका- मन्नू भंडारी
२. सुशीला कौन थी? कौन इसकी, किससे, किस बात में तुलना करता था?
उत्तर- सुशीला लेखिका की बड़ी बहिन थी। वह खूब गोरी, स्वस्थ्य एवं हँसमुख थी। पिताजी सुशीला से लेखिका की तुलना हर बात में करते थे।

३. इस तुलना का लेखिका के व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर- इस तुलना ने लेखिका के भीतर गहरे रूप से हीन ग्रंथि पैदा कर दी।
४. हीन भावना के कारण लेखिका को क्या अनुभूति होती है?
उत्तर- इस हीन ग्रंथि से लेखिका नाम, मान, सम्मान और प्रतिष्ठा पाकर थी अब तक उभर नहीं पाई।वह अपनी लेखकीय उपलब्धियों पर भरोसा नहीं कर पाती है। जब इनका जिक्र होता है तो वह संकोच से सिकुड़ जाती है।
५. पिता के शक्की स्वभाव का लेखिका पर क्या असर पड़ी?
उत्तर- लेखिका के पिता शक्की स्वभाव के थे। इसका कारण था, कि उन्हें अपनों ने ही धोखा दिया था। पिता का यही शक्की स्वभाव कुँठा के रूप में लेखिका के व्यक्तित्व में समा गया था। वे भी शक्की स्वभाव की बन गई थी।

विषय-वस्तु संबंधी प्रश्न-
१. लेखिका के पिता ने रसोई को भटियारखाना कहकर क्यों संबोधित किया है?
उत्तर- लेखिका के पिता चाहते थे कि वह रसोई से दूर रहे वे रसोई को भटियारखाना कहते थे। उनका कहना था कि रसोई के इस भटियारखाने में रहने से व्यक्ति की क्षमता भट्टी में चली जाती है।
२. त्याग और सहिष्णुता की मूर्ति होने पर भी लेखिका की माँ उसकी उसकी आदर्श क्यों न बन सकी?
उत्तर- लेखिका की माँ अनपढ़ किन्तु धैर्यवान महिला थी। उनमें सहनशक्ति इतनी थी कि पिता के अकारण रोब को कर्तव्य समझकर झेल जाती। उन्होंने कभी किसी से कुछ नहीं माँगा। लेखिका को लगता है कि माँ का त्याग एक मजबूरी है जो उनकी ताकत नहीं कमजोरी का लक्षण है।

पाठ-१५
स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन
महावीर प्रसाद द्विवेदी

गद्यांशों पर अर्थ ग्रहण संबंधी प्रश्न-

(क) नाटकों में स्त्रियों का...................... प्राकृत ही में क्यों धर्मोपदेश देते?
प्रश्न-
१. पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर- पाठ का नाम- स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन
लेखक का नाम- महावीर प्रसाद द्विवेदी
२. लेखक नाटकों में स्त्रियों के प्राकृत बोलने पर क्या सफाई देते हैं?
उत्तर- लेखक का कहना है कि प्राचीन नाटकों में स्त्री-शिक्षा पात्रों द्वारा प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ होने का सबूत नहीं है। यह तो कहा जा सकता है कि वे संस्कृत नहीं बोल सकती थीं, पर संस्कृत न बोलना न तो उनके अनपढ़ होने का सबूत है और न ही उनके गँवार होने का।
३. प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ क्यों नहीं बताया जा सकता?
उत्तर- भवभूति और कालिदास के समय में भी शिक्षित का सारा समुदाय केवल संस्कृत ही नहीं बोलता था, प्राकृत भी प्रचलन में थी। अतः प्राकृत बोलने वाली स्त्रियों को अपढ़ नहीं कहा जाना चाहिए।
४. प्राकृत उस समय की प्रचलित भाषा थी? लेखक के क्या तर्क है।

उत्तर- प्राचीन काल में भी बोलचाल की भाषा प्राकृत थी। प्राकृत के प्रचलन के अनेक सबूत मिलते हैं। इसी प्राकृत भाषा में बौद्धों और जैनों के हजारों ग्रन्थ लिखे गए। भगवान शाक्य मुनि तथा उनके शिष्य प्राकृत में ही उपदेश देते थे। इससे सिद्ध होता है कि उस समय की प्रचलित भाषा प्राकृत थी।

(ख) शिक्षा बहुत व्यापक शब्द....................ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

प्रश्न-

१. पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ का नाम- स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन

लेखक का नाम- महावीर प्रसाद द्विवेदी

२. शिक्षा की व्यापकता से क्या आशय है?

उत्तर- शिक्षा का व्यापकता से आशय है-शिक्षा केवल पढ़ाई-लिखाई तक सीमित नहीं है उसमें अन्य बहुत सी बातें शामिल हैं। पढ़ाई-लिखाई तो शिक्षा का एक अंग भर है।

३. दोष शिक्षा या शिक्षा प्रणाली में से किसमें है? उसका क्या करना चाहिए?

उत्तर- दोष शिक्षा में नहीं, शिक्षा प्रणाली में है। अतः दूषित शिक्षा-प्रणाली में संशोधन किया जाना चाहिए। यह बात लड़कों तथा लड़कियों, दोनों की शिक्षा प्रणाली पर लागू होती है। दोनों में सुधार होना अपेक्षित है।

४. लेखक किस बात पर बल देता है?

उत्तर- लेखक इन बातों पर बल देता है-

- शिक्षा प्रणाली में सुधार करो।
- शिक्षा के स्वरूप एवं क्षेत्र पर बहस नही।
- पढ़ने-लिखने को दोष मत दो।
- स्त्री शिक्षा का महत्व समझो।

गद्य पाठों पर आधारित विषयवस्तु संबंधी प्रश्नोत्तर-

१. स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ है- कुतर्कवादियों की इस दलील का खण्डन द्विवेदी जी ने कैसे किया है, अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- द्विवेदी जी ने अनेक दलीले देकर कुतर्कवादियों की इस बात का खण्डन किया है कि स्त्रियों को पढ़ाने से अनर्थ होते हैं। द्विवेदी जी का कहना है कि शिक्षित पुरुष भी चोरी, डकैती, हत्या, व्यभिचार जैसे दुष्कर्म करते हैं तब क्या स्कूल-कॉलेज बंद कर देने चाहिए अर्थात् शिक्षा के कारण अनर्थ नहीं होते। ऐसी दलील कोई मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति ही दे सकता है। अनर्थ केवल स्त्रियों से ही नहीं, पुरुषों से भी होते हैं और वे व्यक्ति विशेष का चाल-चलन देखकर जाने भी जा सकते है। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़ाना चाहिए।

२. पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अपढ़ होने का सबूत है। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा मे बोलना उनके अपढ़ होने का सबूत नहीं माना जा सकता। उनका संस्कृत बोलना यह सिद्ध नहीं करता कि अनपढ़ या गँवार थी। प्राकृत उस समय की प्रचलित भाषा थी। बौद्धों, जैनों और भगवान शाक्य के धर्मोपदेश प्राकृत भाषा में ही थे। बौद्धों के धर्मग्रन्थ त्रिपिटक की रचना प्राकृत भाषा में ही थे। उस समय प्राकृत सर्वसाधारण की भाषा थी। उस

समय स्त्रियों का संस्कृत बोल पाना अपढ़ या गँवार होने का सबूत नहीं क्यों कि उस समय बहुत कम लोग ही संस्कृत का प्रयोग करते थे।

३. परम्परा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ाने हो- तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- हमें परम्परा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार करना चाहिए जो स्त्री-पुरुष की समानता को बढ़ाते हों।

- प्रकृति ने मानव को स्त्री-पुरुष दो वर्गों में अवश्य विभाजित किया है पर उनमें भेदभाव नहीं किया है। सृष्टि के विकास में दोनों की समान रूप से भागीदारी है। इसीलिए कहा गया हैं कि-

एक रूप है सबके अन्दर, नर है चाहे नारी है।

क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, भगवान की रचना सारी है।।

- स्त्री पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं।

- हमारी भारतीय संस्कृति में नारी पूजनीय कहा गया है।

- स्त्री-पुरुष की समानता परिवार औऱ समाज को आदर्श रूप प्रदान करती है।

४. महावीर प्रसाद द्विवेदी का निबंध स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है, कैसे?

उत्तर- महावीर प्रसाद द्विवेदी का यह लेख उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है। इस निबंध में उन्होने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए स्त्री-शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला है तथा इसे अत्यंत आवश्यक और उपयोगी बताया है। उन्होंने प्राचीनकाल के अनेक उदाहरण एवं दृष्टांत देकर स्त्री-शिक्षा की आवश्यकता की जोरदार वकालत की है। उन्हें पता था कि भविष्य में स्त्री-शिक्षा की बहुत जरूरत होगी। वे स्त्रीशिक्षा के बारे में अपनी खुले विचारों को प्रतिपादित करते हैं। वे स्त्रियों की शिक्षा में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने के भी हिमायती हैं, पर उसे अनर्थकारी मानने को तैयार नहीं है। इस प्रकार उन्होंने दूरगामी दृष्टि का परिचय दिया है।

अभ्यास प्रश्नः—

१. परम्परा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ाने हो- तर्क सहित उत्तर दीजिए।

२. महावीर प्रसाद द्विवेदी का निबंध स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन उनकी दूरगामी और खुली सोच का परिचायक है, कैसे?

पाठ-१६

नौबतखाने में इबादत

यतीन्द्र मिश्र

गद्यांशो पर आधारित अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न-

(क) इधर सुलोचना की नयी फिल्म.............सारे आरोह-अवरोह दिख जाते थे।

(१) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ का नाम- नौबतखाने में इबादत

लेखक का नाम- यतीन्द्र मिश्र

(२) बालाजी मन्दिर में शहनाई बजाने से बिस्मिल्ला खाँ को कितनी आमदनी होती थी?

उत्तर- बालाजी मन्दिर में शहनाई बजाने से बिस्मिल्ला खाँ को अठन्नी की आमदनी होती थी।
(३) बिस्मिल्ला खाँ को कौनसे जबरदस्त शौक थे?
उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को कुलसुम हलवाइन की संगीतमय कचौड़ी खाने और सुलोचना की फिल्मे देखने का शौक था।
(४) कचौड़ी के लिए किस विशेषण का प्रयोग किया है और क्यों?
उत्तर- कचौड़ी के लिए संगीतमय विशेषण का प्रयोग किया गया है क्यों कि कलकलाते घी में कचौड़ी डालने की आवाज से बिस्मिल्ला खाँ को सारे आरोह-अवरोह महसूस होते थे।

(ख) काशी संस्कृति की पाठशाला....................उपकृत होने वाला अपार जनसमूह है।
प्रश्न-
(१) काशी को शास्त्रों में किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर- काशी को शास्त्रों में आनन्दकानन नाम से जाना जाता है।
(२) हनुमान और शिव को काशी में किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर- हनुमान को कलाधर तथा शिव को विश्वनाथ के नाम से काशी में जाना जाता है।
(३) काशी को किस शहनाई वादक के लिए भी जाना जाता है?
उत्तर- काशी को प्रमुख शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ के लिए भी जाना जाता है।

विषयवस्तु-विचार या संदेश सम्बन्धी प्रश्नोत्तर-
१. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?
उत्तर- शहनाई को विवाहोत्सव, जन्मदिन, स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस तथा अन्य शुभावसरों पर बजाया जाता है। शहनाई मांगलिक अवसरों पर बजायी जाती है। बिस्मिल्ला खाँ मांगलिक अवसरों पर शहनाई बजाते आ रहे हैं। इसलिए उन्हें मंगल-ध्वनि का नायक कहा गया है।
२. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौनसी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?
उत्तर- भारत रत्न बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की निम्नांकित विशेषताओं ने हमें प्रभावित किया-
(१) उनके व्यक्तित्व की सादगी, फकीरी स्वभाव, कला के प्रति समर्पण एवं भक्ति तथा स्वाभिमान की भावनाएँ उनमें उच्च है।
(२) धर्म और जाति की संकीर्णताओं से बिस्मिल्ला खाँ मुक्त रहे। सच्चे मुसलमान होते हुए काशी के बालाजी के प्रति श्रद्धाभाव तथा बाबा विश्वनाथ के प्रति आस्था रखना उनके व्यक्तित्व की अद्‌भुत विशेषता है।
(३) भारत रत्न मिलने के बाद भी अहंकार बिस्मिल्ला खाँ को छू नहीं पाया।

पाठ-१७
संस्कृति
भदंत आनंद कौसल्यायन

(क) जो शब्द सब सें कम ------- कितना बड़ा आविष्कर्त्ता रहा होगा।
प्रश्न-
(१) लेखक ने किसे बड़ा आविष्कर्त्ता माना है और क्यों?

उत्तर- लेखक ने आग व सुई के आविष्कर्त्ता को बड़ा माना है, क्यों कि आग से ही तो आज घर-घर में चूल्हा जलता है और सुई से दो टुकड़ों को एक साथ जोड़ा जाता है। वस्तुतः लेखक ने इनकी युक्ति व सूक्ष्म के लिए इन्हें बड़ा आविष्कर्त्ता माना है।

(२) किन शब्दों का प्रयोग ज्यादा होता है? उनके बारे में क्या जानना जरूरी है?

उत्तर- सभ्यता और संस्कृति का प्रयोग सबसे ज्यादा होता है। इनके बारे में यह जानना जरूरी है कि क्या ये दोनों चीजें एक ही हैं अथवा दो भिन्न वस्तुएँ। यदि ये दो वस्तुएँ हैं, तो इनमें अंतर क्या है?

(३) लेखक ने आविष्कारों के उदाहरण क्यों दिए है?

उत्तर- लेखक ने आवष्कारों के उदाहरणों के माध्यम से संस्कृति और सभ्यता शब्दों के अर्थ समझाने की कोशिश की गई है।

(ख) (ग) इस प्रकार हम देखते हैं ---------- श्रेष्ठ ही नहीं स्थायी भी है।

प्रश्न-

(१) संस्कृति मे छीछालेदर क्या है?

उत्तर- संस्कृति का स्वरूप विकृत होता जा रहा है। संस्कृति के नाम पर जिस कूड़े-करकट का बोध होता है, उसे संस्कृति कतई नहीं कहा जा सकता।

(२) मानव संस्कृति के बारे में क्या कहा गया है?

उत्तर- मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है, अर्थात् उसे बाँटा नहीं जा सकती। इसका कल्याणकारी अंश श्रेष्ठ और स्थायी है।

(ग) भौतिक प्रेरणा ------------ मानवता सुख से रह सके।

प्रश्न-

(१) उदाहरणों के माध्यम से लेखक क्या स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा है?

उत्तर- लेखक ने उदाहरणों के माध्यम से परोपकार और दूसरों के कल्याण की भावना की आवश्यकता के महत्व को रेखांकित करने का प्रयास कर रहा है।

(२) कार्ल मार्क्स ने क्या कार्य किया?

उत्तर- कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन मजदूरों के जीवन को सुखी बनाने के स्वप्न देखने में बिता दिया। वे स्वयं जीवन भर गरीबी में रहे।

(३) सिद्धार्थ ने अपने घर का त्याग क्यों किया?

उत्तर- सिद्धार्थ ने अपने घर का त्याग इसलिए किया जिससे लोभ-तृष्णा के वशीभूत, लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके। लोगों के जीवन में सुख-शांति आ सके।

कृत्तिका

पूरक पुस्तक

१- माता का आँचल

-शिवपूजन सहाय

निबंधात्मक प्रश्न-

१. प्रस्तुत पाठ में माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखक को अपने पिता द्वारा भरपूर स्नेह, प्यार दुलार मिलता है। पूजा-पाठ, स्नान, भोजन, बच्चे के साथ खेलना, कुश्ती लड़ना आदि सभी क्रियाओं में माता-पिता का वात्सल्य भाव से भरा प्रेम लक्षित है। बच्चे के छोटे से छोटे काम में भी माता-पिता द्वारा मदद किया जाना भी उनके वात्सल्य का ही एक अंश है। बच्चे के माता-पिता उसे भरपूर प्यार दुलार और अच्छी शिक्षा देकर नीतिवान बनाना चाहते हैं और बच्चे पर थोड़ी सी विपदा आने पर ही दोनों चिंतित भी हो जाते है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

१. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर- बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को इस प्रकार व्यक्त करते है- माता-पिता की आज्ञा मानकर और माता-पिता की सेवा करके, उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षा को अपनाकर अपने कार्यो से माता-पिता को सुख देकर।

२. माँ भोलानाथ को कन्हैया किस प्रकार बनाती थी?

उत्तर- माँ भोलानाथ को सिर में तेल, काजल लगाकर चोटी बाँधकर और उसमें फूलदार लट्टू लगाकर कन्हैया बनाती थी।

३. माँ भोलानाथ को क्या कहकर खाना खिलाया करती थीं?

उत्तर- माँ भोलानाथ के लिए थाली में दही-भात सानती और अलग-अलग तोता, मैना, कबूतर, हंस, मोर आदि के बनावटी नाम से कौर बनाकर यह कहते हुए खिलाती जाती कि जल्दी खा लो, नहीं तो उड़ जाएंगे।

अभ्यास हेतु प्रश्न (निबंधात्मक)

१. 'माता का आँचल' पाठ में बाल मनोविज्ञान का सहज परिचय मिलता है, स्पष्ट कीजिए।

२. प्रस्तुत पाठ में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है, आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं

३. लड़को की मंडली जुटकर विवाह की क्या तैयारी करती थी

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

१. बच्चे मोट खींचने का खेल कैसे खेलते थे?

२. चूहों के बिल में पानी उलीचने पर क्या हुआ?

३. प्रस्तुत पाठ के प्रमुख पात्र का वास्तविक नाम क्या था बाबूजी उन्हें किस नाम से पुकारते थे?

२. जाँर्ज पंचम की नाक

कमलेश्वर

अभ्यास कार्य : पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर-

१. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है

उत्तर- सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह सरकारी व्यवस्था, हुक्मरानों की औपनिवेशिक व गुलाम होने की मानसिकता दर्शाती है। रानी एलिजाबेथ की भारत यात्रा के अवसर पर हमारी सरकारी व्यवस्था का आचरण ऐसा है, जैसे हम आज भी अंग्रेजों के गुलाम हैं। राजा और रानी को प्रसन्न करने के लिए प्रशासन परेशान हो जाता है। किन्तु राष्ट्र के सम्मान की चिन्ता नही करते।

२. और देखते ही देखते नई दिल्ली का काया पलट होने लगा नई दिल्ली के काया पलटके लिए क्या-क्या प्रयत्न किए गए होंगे?

उत्तर- नई दिल्ली की काया पलट के लिए हर स्तर पर अनेक योजनाएँ बना दी गई होगी। दिल्ली की सड़कों एवं महत्वपूर्ण इमारतों की मरम्मत कर रंग-रोगन द्वारा उन्हें सजाया-सँवारा गया होगा। रानी के आवागमन के रास्तों पर प्रकाश की व्यवस्था एवं सजावट की गई होगी। मार्ग पर दोनों देश के ध्वज लहराए गए होंगे। राष्ट्रीय महत्व की इमारतों की विशेष साज-सज्जा की होगी। तथा पूरे शहर की साज-सज्जा की उत्तम व्यवस्थाकी गई होगी। लेखक ने काया पलट का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है-
-----सड़कें जवान हो गई, बुढ़ापे की धूल साफ हो गई। इमारतों ने नाजनीनों की तरह श्रृंगार किया।

३. जार्ज पंचम की नाक को पुनः लगाने के लिए मूर्तिकार ने क्या-क्या यत्न किए।

उत्तर- इंगलैंड की रानी एलिजाबेथ द्वितीय की आने की तैयारी के दौरान ही जॉर्ज पंचम की लाट की नाक गायब हो गई। उच्च स्तर पर तय हुआ कि नाक का होना अनिवार्य है। अतः नाक को पुनः लगाने की लिए मूर्तिकार ने निम्नलिखित प्रयत्न किए।

- सर्वप्रथम उन्होनें जार्ज पंचम की नाक में प्रस्तुत पत्थर को खोजने का प्रयास किया।

- उसने देशभर में घूम-घूमकर शहीद नेताओं की मूर्तियों का नाप लिया, ताकि उन मूर्तियाँ में से किसी की नाक को जार्ज पंचम की लाट पर लगाया जा सके किन्तु सभी नाकें आकार में बड़ी निकली।

- मूर्तिकार ने १९४२ में बिहार सेक्रेटेरिएट के सामने शहीद बच्चों की मूर्ति का नाप लिया किन्तु वे भी बड़ी निकली।

- अंत में उसने जिन्दा नाक लगाने का निर्णय किया और जिन्दा नाक लगा दी गई।

४. नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का घोटक है।यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है लिखिए।

उत्तर- नाक को विषय बनाकर लेखक ने इसे कई प्रसंगों के साथ जोड़ा है तथा मुख्य रूप से इसी बात को दर्शाया है कि नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। नाक को मुहावरों के रूप में प्रस्तुत किया गया है जैसे-- जगह जगह ऐसी नाकें खड़ी थी।

- अगर यह नाक नहीं तो हमारी भी नाक नहीं रह जाएगी आदि।

स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में अंग्रेजों की करारी हार उनकी नाक कटने का ही प्रतीक है। इसी प्रकार देश के शहीदों के सम्मान के लिए भी नाक शब्द का प्रयोग हुआ है। उनकी नाक को जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ा बताया गया है। इस प्रकार पूरी व्यंग्य रचना में नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है।

५. अखबारों ने जिंदा-नाक लगने की खबर को किस तरह से प्रस्तुत किया?

उत्तर- अखबारों ने जिन्दा नाक लगने की खबर को चुपचाप बिना किसी शोर-शराबे के बड़ी सादगी से प्रस्तुत किया। उन्होंने छापा कि जॉर्ज पंचम की लाट को जिन्दा नाक लगाई गई है --- यानी ऐसी नाक, जो कतई पत्थर की नहीं लगती।

६. जॉर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे?

उत्तर- जाँर्ज पंचम की नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप थे, क्योंकि उन्हें भी लग रहा था कि इस कार्य से पूरे देश को चोट पहूँची है। जॉर्ज पंचम की लाट पर जिन्दा नाक लगाना हमारे प्रशासन की मानसिक गुलामी का प्रतीक था। स्वतंत्रता पश्चात् देश भर में स्थापित अंग्रेज शासकों की मूर्तियों को हटाने के लिए इन अखबारों द्वारा प्रबल अभियान चलाया गया था। अब पुनः उन मूर्तियों के सम्मान के लिए देश की नाक कटती देखकर अखबार स्वयं को ठगा-सा महसूस कर रहे थे इसलिए वे चुप थे। लेखक ने इस प्रकार पत्रकारिता की सार्थकता और व्यावसायिक पत्रकारिता को अपने व्यंग्य का पात्र बनाया है।

पाठ-३.साना साना हाथ जोडि

मधु कांकरिया

प्रश्न-

१. गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर क्यों कहा गया?

उत्तर- पर्वतीय स्थानों की कठिन परिस्थितियाँ तथा विषमताएँ जीवन को सरल नहीं बनने देती है। पर्वतीय क्षेत्रों का जीवन अत्यन्त परिश्रमपूर्ण होता है। ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा जाता है।

२. लोंग स्टॉफ में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर- धर्म चक्र को देखने के उपरान्त लेखिका मधु कांकरिया को ड्राइवर-कम-गाइड जितेन ने बताया कि बौद्ध धर्म के अनुयायियों का मानना है कि धर्मचक्र घुमाने से सारे पाप धुल जाएँगे। लेखिका को महसूस हुआ कि अन्य देशवासियों की कर्मकाण्डी मानसिकता यहाँ पर भी हावी है। धर्म और आस्था के स्थल पर सम्पूर्ण देश इसी प्रकार की धार्मिक भावना से ग्रस्त है।

३. कटाओ पर किसी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। उस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए।

उत्तर- कटाओ को भारत का स्विटजरलैण्ड कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। वहाँ पर कोई दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। यदि वहाँ दुकानें होगी तो व्यावसायीकरण से आबादी बढ़ेगी और गन्दगी का साम्राज्य फैलेगा। जिससे उस क्षेत्र की सारी स्वच्छता, नैसर्गिकता और सुन्दरता दुष्प्रभावित होगी। दुकान का न होना वहाँ की सुन्दरता के बने रहने का कारण है।

निबंधात्मक प्रश्न-

१. प्रकृति के अनंत और विराट स्वरूप को देख लेखिका को कैसा लगा?

उत्तर- प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को लगा कि उसके भीतर कुछ बूँद-बूँद कर पिघल रहा है। वह बहते झरने के संगीत के साथ अपनी आत्मा का संगीत सुनने लगी। लेखिका का मन काव्यमय हो गया। जीवन की अनंतता के प्रतीक उस झरने में लेखिका को जीवन की शक्ति का अहसास होने लगा। उसके भीतर की सारी मानसिकता और दुष्ट वासनाएँ इसकी निर्मल धारा में बहती जान पड़ी।

३. कटाओ के प्राकृतिक दृश्य को देखकर लेखिका को क्या अनुभूति हो रही थी?

उत्तर- सम्पर्णता के उन क्षेणों में ये हिम शिखर लेखिका को उसके आध्यात्मिक अतीत से जोड़ रहे थे और वह सोच रही थी कि शायद ऐसी ही विभोर कर देने वाली दिव्यता के बीच ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की होगी। जीवन सत्यों को खोजा होगा। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का मंत्र पाया होगा। अंतिम

सम्पर्णता का प्रतीक वह सौन्दर्य ऐसा है कि बड़े से बड़ा अपराधी भी इसे देख ले तो कुछ क्षणों के लिए करुणा का अवतार बृद्ध बन जाए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

१. प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

उत्तर- प्रकृति का जल संचय करने का अपना अनूठा ही ढंग है। सर्दियों में वह बर्फ के रूप में जल इकठ्ठा करती है। गर्मियों में जब लोग पानी के लिए तरसते हैं तो ये बर्फ शिलाएँ पिघलकर जलधारा बन जाती है जिससे जल प्राप्त कर हम अन्य दैनिक आवश्यकताएँ पूरी करते हैं।

अभ्यास हेतु प्रश्न-

१. यात्रा-वृत्तांत के आधार पर हिमालय के जिन रूपों का चित्रण लेखिका ने किया है, उनके विषय में अपने शब्दों में लिखिए।

२. जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, भौगोलिक स्थिति तथा जन-जीवन के विषय में कौन-कौन सी महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी?

३. एक कुशल गाइड में कौन-कौन से गुण होने चाहिए।

४. यात्रावतान्त का जीवन में क्या महत्व है पाठ के आधार पर लिखिए।

५. देश की सीमा पर बैठे फौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते है उनके प्रति हमारा क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए।

६. कभी श्वेत और कभी रंगीन पताकाओं का फहराया जाना किन-किन अवसरों की ओर संकेत करता है?

४. एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा

शिव प्रसाद मिश्र रुद्र

प्रश्न-

१. टुन्नू दुलारी के लिए क्या लाया और क्यों?

उत्तर- टुन्नू होली के त्योहार पर दुलारी के लिए गाँधी आश्रम की बनी हुई खद्दर की एक साड़ी लाया था क्योंकि उसके हृदय में दुलारी के लिए सच्चा आत्मिक प्रेम या जो रूप रंग का कायल नहीं होता। वह दुलारी को देवी के समान पूजता था।

२. कठोर हृदया समझी जाने वाली दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर क्यों विचलित हो उठी?

उत्तर- टुन्नू के हृदय में दुलारी के प्रति पवित्र और सात्विक प्रेम भावना थी। जबकि दुलारी उसके प्रति उपेक्षा ही दिखाती थी। सच्चाई यह थी कि दुलारी मन ही मन टुन्नू से प्रेम करती थी। इस छिपी प्रेम-भावना के कारण ही वह टुन्नू की मृत्यु पर विचलित हो उठी। सुबह ही उसने टुन्नू का अपमान किया था इसकी ग्लानि और अपने प्रेम को अभिव्यक्त न कर पाने का अफसोस था।

३. भारत की स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार दिया?

उत्तर- टुन्नू ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते हुए जुलूस निकालते समय अपने प्राणों की आहुति दे दी। उसकी मृत्यु के आघात ने दुलारी के प्रेम को राष्ट्र-प्रेम में बदल दिया। उसने अपनी विदेशी धोतियों का नया बंडल विदेशी वस्त्र एकत्र करने वाले क्रांतिकारियों को दे दिया और टुन्नू की मृत्यु के पश्चात उसकी मृत्यु के स्थान पर आयोजित समारोह में खादी की साड़ी पहनकर अपने गीत- एही ठैयाँ ----- द्वारा अंग्रेजों के प्रति विरोध प्रकट किया।

अभ्यास कार्य

१.ऐही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा। पाठ का प्रतीकार्थ समझाते हुए शीर्षक की उपयुक्तता सिद्ध कीजिए।

पाठ-५
मैं क्यों लिखता हूँ

प्रश्नोत्तर

प्र० लेखक ने अपने को हिरोशिमा विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर- लेखक ने एक दिन हिरोशिमा के एक लम्बी उजली छाया उत्कीर्ण थी। विस्फोट के समय कोई व्यक्ति वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फोट से बिखरे रेडियोधर्मी पदार्थो की किरणें उसमें फँस गयी होगी। किरणोंसे व्यक्ति भाप बनकर उड़ गया होगा और उसकी प्रतिच्छाया उस पत्थर पर बन गयी होगी। यह देखकर लेखक में अपनें आप को हिरोशिमा विस्फोट का भोक्ता महसूस किया।

प्र० लेखक ने कौन-सी बातें लेखन हेतु प्रेरित करतीं हैं?

उत्तर- लेखक को उसकी भीतरी विवशता लेखन हेतु प्रेरित करती हैं और लिखकर ही लेखक उससे मुक्ति पाता है। प्रत्यक्ष अनुभव जब अनुभूति का रूप ग्रहण कर लेता है तब लेखक लेखन कार्य हेतु प्रेरित होता है। जब यह अनुभूति संवेदना एवं भाव-जगत का हिस्सा बन जाती है तो यह रचनाके रूप में सहसा ही आ जाती है।

प्र० हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयेग कहाँ-कहाँ हो रहा है?

उत्तर- विज्ञान का दुरुपयोग रक्षा, चिकित्सा, प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ने, गोपनीय सूचनाओं और आँकड़ों के क्षेत्र में हो रहा है। आतंकवादी गतिविधियों मे भी इसका दुरुपयोग हो रहा है। रक्षा के क्षेत्र में संहारक अस्त्रों, मिसाइलों एवं बमों का आविष्कार किया जा रहा है। अणु बम से सम्पूर्ण मानवता के अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो गया है। जैविक शस्त्र विकसित किये जा रहे हैं। बजट का बहुत बड़ा हिस्सा इन अस्त्रों के निर्माण में लग जा रहा है जिससे अन्य क्षेत्रों की उपेक्षा होती है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है। नवीन एवं उन्नत यंत्रों के माध्यम से शिशुओं का लिंग जानना संभव हो गया है। बालिका भ्रूण की हत्या हो रही है। लिंग अनुपात बिगड़ रहा है। इसके अलावा वैज्ञानिक यंत्रों एवं उत्पादों से प्रदूषण बढ़ रहा है। प्रकृति से छेड़छाड़ की जा रही है। प्रदूषण के कारण ग्लोबल वार्मिंग या भूमण्डलीय ऊष्णता की समस्या आ रही है। कम्पूटर के माध्यम से साइबर अपराध, सामने आ रहे हैं। आतंकवादी इन संजालों का उपयोग नकारात्मक रुप से कर रहें हैं। दुरुपयोग हो रहा है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न-

१। हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अन्त एवं बाह्य दोनों दबावों का परिणाम है, यह आप कैसे कह सकते हैं?

२। एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?